



# अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

दुखवंति दुखवी  
इह दुखकडेणं।

अपने दुष्कृत से दुःखी  
बना हुआ प्राणी दुःख का  
ही अनुभव करता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 27 • 10 - 16 अप्रैल, 2023



प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 08-04-2023 • पेज : 16 • ₹ 10

२६२२वें महावीर जन्म कल्याणक दिवस का आयोजन

## महावीर के साधना पथ का अनुसरण करें : आचार्यश्री महाश्रमण

बोरियावी (खेड़ा-गुजरात),  
३ अप्रैल, २०२३

चैत्र शुक्ला त्रयोदशी, वर्तमान अवसर्पिणी काल के अंतिम चौबीसवें तीर्थंकर परम प्रभु शासन देव भगवान महावीर का जन्म कल्याणक दिवस। आज ही के दिन राजा सिद्धार्थ के घर माँ त्रिशला की पावन कुक्षी से वर्धमान का अवतरण हुआ था। आज पूरा देश भगवान महावीर का २६२२वाँ जन्म कल्याणक दिवस मना रहा है।

भगवान महावीर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि चैत्र मास का शुक्ल पक्ष और त्रयोदशी तिथि भगवान महावीर की जन्म जयंती का दिन। हमारी दुनिया में आदमी पैदा होते हैं, जीवन जीते हैं और एक दिन चले जाते हैं।

जन्म और मृत्यु के बीच का जीवन काल बड़ा महत्वपूर्ण है कि इस जीवन काल में जीवन कैसे जीया? जीवन अच्छा जीया है, बहुत अच्छा कृतत्व किया है, तो मानना चाहिए कि जीवन सुफल हो गया। भगवान महावीर भी एक बच्चे के रूप में जन्मे थे। करीब ७२ वर्ष का उनका जीवन काल था। पर जो जीवन काल उनका साधना काल व केवल ज्ञान का वह विशेष था। वे तो सार्वज्ञिक थे।

भगवान महावीर ने साधना और अध्यात्म का जीवन जीया और वे अध्यात्म के प्रवक्ता थे। आगम के आधार पर देखें कि भगवान गौतम ने अनेक जिज्ञासाएँ की थीं। उनके प्रश्नों के उत्तरों के आधार पर हमें कितना ज्ञान प्राप्त हो रहा है। ईसापूर्व ५६६ वर्ष और विक्रम पूर्व ५४२ वर्ष के समय उनका प्राकट्य हुआ था। वे निरंतरायता को उपलब्ध हुए। आगम के आधार पर हम भगवान महावीर को जान



सकते हैं।

भगवान महावीर या जैन दर्शन के अनेक सिद्धांत हैं उनमें कर्मवाद एक व्यापक सिद्धांत है। उसके ज्ञान से वैराग्य वृत्ति का भी विकास हो सकता है। अनेकांतवाद व आत्मवाद का भी सिद्धांत है। पुनर्जन्मवाद भी आत्मवाद का एक सिद्धांत है। मूल पाठ तो आगमों का सामने आ चुका है। अनुवाद-टीपण रूप में भी कई आगम आ चुके हैं या आने की तैयारी में हैं। सारे आगम इस रूप में सामने आ जाएँ तो जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ का एक कार्य पूर्ण हो सकेगा। अनेक चारित्र्यात्मक व व्यक्ति इस कार्य में लगे हुए हैं। यह कार्य समय और श्रम माँगता है।

भगवान महावीर जयंती के दिन ही गुरुदेव तुलसी ने आगम संपादन के कार्य करने की घोषणा करवाई थी। सारा कार्य

निष्ठापूर्वक सामने आ जाए तो एक अच्छी निष्पत्ति आ सकती है। भगवान महावीर के ध्यान के आधार पर ही प्रेक्षाध्यान का नामकरण लगभग आधी शताब्दी पहले जयपुर में घोषित हुआ था। गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत को भी एक व्यापक रूप प्रदान कर दिया। कोई भी आदमी अणुव्रत को स्वीकार कर सकता है। अणुव्रत यात्रा भी चल रही है। जीवन विज्ञान का उपक्रम भी चल रहा है।

महावीर जयंती के दिन अनेक संप्रदायों के लोग इस प्रसंग से एक साथ जुड़ जाते हैं। भगवान महावीर की साधना का सार है—अहिंसा, संयम और तप। हम भी साधना की दृष्टि से जितना संभव हो सके, आगे बढ़ने का प्रयास करें। चतुर्विध धर्मसंघ में ये संस्कार बढ़ते रहें। समण श्रेणी द्वारा विदेशों में भी संस्कारों एवं तत्त्व ज्ञान

से जुड़ने का अवसर मिला है। अच्छी बातों और यथार्थता व अनेकांत का विकास होता रहे।

अनेकांत में समन्वय की बात है। इसका मतलब यह नहीं है कि हर बात सही ही होगी। अपना-अपना चिंतन हो सकता है। तत्त्व बोध की बात को हम समझने का प्रयास करें कि किस अपेक्षा से बात कही गई है। हमारे साधुओं में ज्ञान का, साधना का और वकृत्व कला का भी यथायोग्य विकास होता रहे।

आज सरदार पटेल के नाम से बने विद्या संस्थान आए हैं। यहाँ विद्या के विकास के साथ जीवन विज्ञान, अच्छे संस्कारों का भी विकास होता रहे।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि हम अपने आपको सौभाग्यशाली मानते हैं कि हमें इस वैज्ञानिक व टेक्नोलॉजी

के युग में भगवान महावीर के दर्शन को समझने, जानने का अवसर मिल रहा है। जीवन की सफलता का सबसे बड़ा सूत्र है—जागरूकता। बिरले लोग ऐसे होते हैं, जो भीतर और बाहर दोनों ओर से जागरूक होते हैं। भगवान महावीर ऐसे ही बिरले व्यक्तित्व थे। उनकी साधना का काल जागरूकता का काल था।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि अनेकांत में समन्वय की बात है, जहाँ भिन्न-भिन्न वस्तुओं में एकत्व देखा जा सकता है। वस्तु अनंतधर्मा होती है और देखने की दृष्टियाँ भी भिन्न होती हैं। एकांगी दृष्टि से सत्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता। सत्य को प्राप्त करने के लिए अनेकांत की दृष्टि से देखना होगा।

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने कहा कि भगवान महावीर ने साधना करके मानव से महामानव के प्रतिमान को साकार किया। वे एक महान वैज्ञानिक थे, उन्होंने भीतर की खोज की। उन्होंने अपने भीतर केवलज्ञान, केवलदर्शन को जागृत कर अति सूक्ष्म रहस्यों को जनता के सामने प्रस्तुत किया, जो कि आज के वैज्ञानिकों के लिए भी बहुत बड़ा चिंतनीय विषय बना हुआ है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में हिमांशु बेगवानी, वीणा देवी, मिहिका बेगवानी, सरदार पटेल कॉलेज से अल्पेश भाई शाह ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। व्यवस्था समिति की ओर से अल्पेश भाई का सम्मान किया गया।

पूज्यप्रवर प्रातः लगभग १३ किलोमीटर का विहार कर बोरियावी के सरदार पटेल कॉलेज में प्रवास हेतु पधारे। आणंद शहर पास में ही है। प्रवचन से पूर्व कॉलेज के विद्यार्थियों के साथ मुनि मनन कुमार जी ने अणुव्रत के बारे में चर्चा-वार्ता कर अणुव्रत को विस्तार से समझाया।

## ज्ञान के अथाह सागर से मोती चुनें : आचार्यश्री महाश्रमण

नडियाड बाहर, २ अप्रैल, २०२३

तेरापंथ के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी सूरत की ओर अग्रसर हैं। प्रातः लगभग १३ किलोमीटर का विहार कर परम पावन नडियाड के श्री बंगलो सोसायटी के परिसर में पधारे। मंगल देशना प्रदान करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि ज्ञान के विषय भी बहुत हैं। अपने-अपने ग्रंथों में अनेक ज्ञान की बातें हैं।

साधारण मनुष्यों में पूरी दुनिया में कौन ऐसा आदमी होगा जो सारे ग्रंथों को पढ़ चुका होगा? भाषाएँ भी अनेक हैं। शब्दों-अक्षरों से ग्रंथ बनते हैं। शब्द तो अपने आपमें जड़ हैं, पर उन शब्दों में जो अर्थ निहित है, उसका बड़ा महत्त्व है। अर्थ के लिए शब्द है। पर इन सबको कब तक पढ़ें, काल सीमित है। बीच-बीच में विज्ञ-बाधाएँ आ सकती हैं, पर सारभूत बातों को पढ़ लो।

(शेष पृष्ठ २ पर)





अक्षय तृतीया हेतु सूरत व्यवस्था समिति ने किया दायित्व स्वीकरण

## ज्ञान प्राप्ति का उत्तम साधन है श्रोतेन्द्रिय : आचार्यश्री महाश्रमण

अमराईवाड़ी ओढ़व, अहमदाबाद

२६ मार्च, २०२३

तेरापंथ के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी का अहमदाबाद के २९ दिवसीय प्रवास का शिखर दिन। परमपावन लगभग ७ किलोमीटर का विहार कर अमराईवाड़ी क्षेत्र के सिंधवी भवन में विशाल जुलूस के साथ पधारे। सूरत से लगभग २१०० लोग दायित्व हस्तांतरण हेतु पहुंचे।

महामनीषी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे शरीर में पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, उनमें एक इंद्रिय जो पंचेन्द्रिय होने का प्रमाण है; वह है श्रोतेन्द्रिय। इस इंद्रिय के बिना कोई जीव पंचेन्द्रिय नहीं हो सकता। यह है, तो जीव पंचेन्द्रिय ही है। इंद्रियों की दृष्टि से सर्वाधिक विकसित प्राणी श्रोतेन्द्रिय वाला ही होता है।

हमारे जीवन में हम सुनते भी कितना हैं। सामान्य रूप से आदमी बोले कम, सुने ज्यादा। श्रोतेन्द्रिय ज्ञान प्राप्ति का एक अच्छा साधन है। आदमी सुनकर कल्याण को जानता है और पाप को भी जान लेता है। अच्छा-बुरा जानने के बाद जो श्रेय है, उसका आचरण करना चाहिए। पाप से बचने का प्रयास करना चाहिए।

गांधीजी के तीन बंदर जो बुरा मत देखो, बुरा मत बोलो और बुरा मत सुनो के उदाहरण हैं। चौथी बात है बुरा सोचो मत। साधु जो साधनाशील एवं ज्ञानवान है, ऐसे



साधु के मुख से आर्षवाणी की बातें सुनने को मिलती हैं तो कान भी धन्य हो जाते हैं। पवित्र वाणी कानों की अतिथि बनती है।

साधु की पर्युपासना करने से प्रवचन श्रवण को मिलता है। श्रवण से ज्ञान, विज्ञान का विकास होते हुए मोक्ष को प्राप्त किया जा सकता है। साधु की वाणी कल्याणी हो सकती है। ये माया साथ में जाने वाली नहीं है, यह एक प्रसंग द्वारा समझाया। संतों-गुरुओं की वाणी दिशा और दशाओं

को बदलने वाली हो सकती है।

हमारे २९ दिवसीय प्रवास का लोगों ने अच्छा लाभ उठाने का प्रयास किया है। हमें अब सूरत-मुंबई की ओर आगे बढ़ना है। २९ वर्षों बाद पुनः अहमदाबाद की यात्रा हो रही है। जितना आध्यात्मिक-धार्मिक प्रचार-प्रसार व सेवा हो सके, करते रहें। आदमी को धैर्य से सुनना चाहिए। सुनकर लाभ उठाने का प्रयास करें।

आज अमराईवाड़ी-ओढ़व आए हैं। यहाँ साध्वी सरस्वती जी का पिछला चातुर्मास हुआ था। ये मुनि राजेंद्र कुमार जी की बहन हैं। खूब अच्छा काम कर रही हैं और करती रहें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि दुर्लभता के बारे में बताया गया है कि इंद्रिय विषयों का निग्रह, तत्त्व ज्ञान और सहज अवस्था को प्राप्त करना दुर्लभ है, पर ये सुलभ हो सकते हैं, जब गुरु का अनुग्रह प्राप्त हो जाता है। गुरु प्राप्त होने पर ही आदमी असंभव को संभव बना सकता है। भारतीय संस्कृति में गुरु का सर्वोच्च आसन बताया गया है। हमें ऐसे गुरु प्राप्त हुए हैं, जो हमारे कल्याण की बात करते हैं।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में नरेंद्र चपलोट ने गीत प्रस्तुत किया। उपासक अरविंद डोसी, उपासिका मंजू गेलड़ा, सज्जनराज सिंधवी ने अपने-अपने भाव

व्यक्त किए। तेरापंथी सभा के मंत्री गणपत हिरण, सभाध्यक्ष रमेश पगारिया, महिला मंडल अध्यक्ष संगीता सिंधवी, तैयुप अध्यक्ष हेमंत पगारिया, वर्धमान स्थानकवासी संघ से पुखराज कूकड़ा ने अपनी-अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त की। महिला मंडल ने गीत प्रस्तुत किया एवं ज्ञानशाला की सुंदर प्रस्तुति हुई। दिगंबर समाज से जनरल जैन ने भावना व्यक्त की। उनका सम्मान किया गया।

शिल्पा भंसाली व नीता भंसाली ने ३० की तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्यप्रवर से ग्रहण किए। अहमदाबाद की सभी संस्थाओं ने विदाई गीत का सुमधुर संगान किया।

साध्वी सरस्वती जी ने समझाया कि अमराईवाड़ी में आज अकल्पित महक आ रही है। गुरुदेव के संयम की खुशबू से शिलाएँ भी महक उठती हैं।

**दायित्व हस्तांतरण का आयोजन**

आज सूरत (जहाँ आगामी अक्षय तृतीया व अनेक कार्यक्रम आयोजन होने वाले हैं) से लगभग २१०० श्रावक-श्राविकाएँ पूज्यप्रवर की सेवा का दायित्व ग्रहण करने आए।

अहमदाबाद प्रवास व्यवस्था समिति से गौतम बाफना ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। सूरतवासियों ने समूह गीत से अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर ने मंगलपाठ सुनाया और सूरतवासियों ने अहमदाबादवासियों से दायित्व ग्रहण किया।

पूज्यप्रवर ने अमराईवाड़ी क्षेत्र में वर्षोंतप करने वालों को इस वर्ष के प्रत्याख्यान करवाए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

### ज्ञान के अथाह सागर से मोती...

#### (प्रथम पृष्ठ का शेष)

श्रुत केवली आचार्य शंयम्भव ने अपने शिष्य पुत्र के लिए सार रूप में दसवें आलियं आगम की रचना की थी। इसमें साधु-जीवन की उपयोगी बातें हैं। ज्ञान पाने के लिए प्रयत्न भी करें, पढ़ें, समय लगाएँ, ज्ञान में मन लगाएँ। रटना चाहिए। व्यक्ति परिश्रम करे तो ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ा जा सकता है।

ज्ञान के साथ-साथ अनुप्रेक्षा, चिंतन-मनन भी होता रहे। जयाचार्य प्रज्ञा पुरुष थे। उन्होंने कितना ज्ञान ग्रहण किया होगा। पढ़ने में आगे बढ़ना है तो नींद को ज्यादा बहुमान न दें। आलस्य में न रहें। सदा स्वाध्याय में रत रहो, प्रमाद मत करो। ज्ञानी लोगों से ज्ञान ग्रहण करने का प्रयास करें। ज्ञान के प्रति सम्मान रखें। दूसरे के ज्ञान प्राप्त करने में बाधा नहीं डालनी चाहिए।

ज्ञान से प्रकाश मिलता है, पथ आलोकित हो जाता है। ज्ञान आ जाए तो उसका आचरण भी हो सकता है। अज्ञान का अंधकार दूर हो, अज्ञान का अनुभव करना भी अच्छी बात है। जो अपने अज्ञान को जानता है, वह सबसे बड़ा ज्ञानी होता है। हम ज्ञान के क्षेत्र में स्वाध्याय, परिश्रम व चिंतन-मनन के द्वारा आगे बढ़ने का प्रयास करें।

आज हम श्री बंगलों में आए हैं। हमें भी शाश्वतता प्राप्त हो। यहाँ भी धर्म के प्रति जागरणा रहे। हमारे संत भी ज्ञान का कार्य करते आए हैं।

पूज्यप्रवर के स्वागत में नडियाड से सुशील भटेवरा, प्राची, कन्या मंडल, स्थानकवासी समाज से सज्जन दुगड़, साजन चोपड़ा, राजुभाई पटेल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा गीत की प्रस्तुति की गई। श्री बंगलो सोसायटी के निवासियों का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

## मानव जीवन में साधना से परम पद की प्राप्ति संभव : आचार्यश्री महाश्रमण

असलाली, अहमदाबाद

३० मार्च, २०२३

चैत्र शुक्ला नवमी, रामनवमी और आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस है। लगभग २६३ वर्ष पूर्व आचार्य भिक्षु ने एक धर्मक्रांति मारवाड़ के बगड़ी नगर में की थी। बगड़ी की जैतसिंह जी की छतरी आज भी हमें उस आत्मवीर की याद दिलाती है।

अहमदाबाद का २९ दिवसीय प्रवास पूर्ण कर आचार्य भिक्षु के परंपरा पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सूरत की ओर अपने चरण आगे बढ़ाए। लगभग ११ किलोमीटर का विहार कर पूज्यप्रवर असलाली के प्राथमिक विद्यालय में पधारे।

धर्मज्ञाता ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि मनुष्य जीवन के रूप में एक दुर्लभ जीवन हमें प्राप्त हुआ है। शास्त्र

में मनुष्य जीवन को दुर्लभ निरूपित किया गया है। मनुष्य एक ऊँचा प्राणी है। मानव जीवन में साधना करके आत्मा से परमात्मा के पद को प्राप्त किया जा सकता है। परमात्मा का स्थान मिलना मानो साधना साध्य है।

साधुत्व आए बिना तो सिद्धि मिलती नहीं। भावों में साधुत्व आएगा ही। वेष चाहे साधु का हो या न हो। द्रव्य साधु में भाव साधुत्व नहीं तो कल्याण नहीं हो सकता। आज चैत्र शुक्ला नवमी का महत्त्वपूर्ण दिवस है, जो रामचंद्रजी से जुड़ा दिन रामनवमी है। उनमें पद लोलुपता नहीं थी, उदात्तता थी।

आज का दिन हमारे धर्मसंघ के प्रथम आचार्य, आचार्य भिक्षु से धर्मक्रांति के रूप में जुड़ा हुआ दिन है। आज के दिन उन्होंने एक संप्रदाय स्थानकवासी से

अभिनिष्क्रमण किया था। आज भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस है।

आचार्य भिक्षु युवावस्था में गार्हस्थ्य अभिनिष्क्रांत हुए थे। वो जब गर्भ में आए तो उनकी माता दीपांजी ने सिंह का स्वप्न देखा था। क्रांति के साथ संघर्ष आ सकता है। समस्या का समाधान तपस्या से हो सकता है। 'प्रभो! तुम्हारे पावन पथ पर जीवन अर्पण है सारा' का सुमधुर संगान करवाया। तेरापंथ मेरा पंथ बना रहे। मैं आचार्यश्री भिक्षु को श्रद्धायुक्त वंदना करता हूँ।

असलाली गाँव में आज आए हैं, गाँव में सद्भावना, नैतिकता का माहौल बना रहे।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि अहंकार, क्रोध, प्रमाद, राग आदि विद्या ग्रहण के बाधक तत्त्व हैं।

## सुखी जीवन के रहस्य कार्यशाला का आयोजन

रिसड़ा, हुगली।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में सुखी जीवन के रहस्य विषय पर कार्यशाला तेरापंथ सभा में आयोजित हुई। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि अपनी आत्मा ही कर्ता है, अपनी आत्मा ही भोक्ता है। अपनी आत्मा ही सुख देने वाली है, अपनी आत्मा दुःख भी देने वाली है। सत्प्रवृत्ति में लगी आत्मा सुख को प्राप्त होती है।

जो कलात्मक ढंग से जीवन जीते हैं वे सुखी होते हैं। सुखी जीवन श्रेष्ठ जीवन

जीने के लिए वर्तमान में जीना, इच्छा संयम, अनासक्ति, विनम्रता, संतुलन संयम, सकारात्मक सोच, प्रसन्नता ध्यान, स्वाध्याय सत्संगत इन सूत्रों की आराधना करनी चाहिए। मुनिश्री ने आगे कहा कि प्रसन्न रहने से सभी दुखों की हानि होती है। आत्मा को हमेशा प्रसन्न रखें।

मुनिश्री ने कहा कि इच्छाओं का जितना संयम होगा, उतना ही जीवन सुखी होगा। इच्छाओं का संयम करना चाहिए। मुनि परमानंद जी ने कहा कि

शुद्ध विचार व संतुलित मानसिक विकास से व्यक्ति का जीवन सुखी हो सकता है।

मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत प्रस्तुत किया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुरेंद्र बैद व उपासक प्रकाश सुराणा ने अपने विचार व्यक्त किए। उपासक सुशील बाफना ने जैन विद्या व कोलकाता तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अजय भंसाली ने महावीर जयंती के संदर्भ में जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

## महावीर जयंती के उपलक्ष्य में गीत

### धर्म सारथी बन आया

● डॉ० साध्वी सुधाप्रभा ●

वीर-प्रभु की जन्म-जयंती, आनंद धन है मंडराया।  
माँ त्रिशला का लाल दुलारा, धर्म सारथि बन आया।।

वीरप्रभु के जन्मोत्सव पर, चिहुंदिशि है खुशियाँ छाई।  
सिद्धार्थ नृप के घर बजी है, देव-दुंदुभि शहनाई।  
जन्मोत्सव पर मेरु नग पर, देवों का टोला आया।।

इंद्रादिक देवों का मन यह शंकित होकर सोच रहा।  
होगा सहन जलाभिषेक क्या? चिंतित मानस बोल रहा।  
मेरु-पर्वत को कंपित कर, प्रभु ने पौरुष दिखलाया।।

चौसठ इंद्र झुके चरणों में, गौरव-गाथा गाते हैं।  
तीर्थकर महावीर प्रभु को, पाकर मोद मनाते हैं।  
नाच रहे मन-मोर सभी के, घर आँगन है मुस्काया।।

दीक्षा लेकर वीर प्रभु ने काटी कर्मों की कारा।  
नहीं घबराया कष्टों में भी, धर्म-जगत को वो तारा।  
कितनों की नैया को प्रभुवर! तुमने पार है पहुँचाया।।

चंदना का वीर प्रभु ने, निज हाथों उद्धार किया।  
चंडकौशिक नाग को भी, बोध देकर शांत किया।  
अर्जुनमाली-सा हत्यारा, वीर शरण पा हरसाया।।

महावीर के पदचिह्नों पर हम सब कदम बढ़ाएँगे।  
साम्य योग की करें साधना, वीर हम बन जाएँगे।  
नमो-नमो महावीर जयंती, उत्सव सबको मनभाया।।

लय : कलियुग बैठा मार---

## संस्कारों के बीजारोपण का सशक्त माध्यम है ज्ञानशाला

केसुम्बला (सिवांगी-मालाणी)।

मुनि सुमति कुमार जी की प्रेरणा से तेरापंथी सभा, केसुम्बला (मारवाड़) के अंतर्गत ज्ञानशाला का गठन हुआ। मुनि सुमति कुमार जी ने कहा कि ज्ञानशाला भावी पीढ़ी में सत्-संस्कारों के बीजारोपण का सशक्त माध्यम है।

इस कार्य की समायोजना के लिए सुरेंद्र सालेचा, ज्ञानशाला-मारवाड़ आंचलिक संयोजक, मोतीलाल जीरावला, संयोजक पारमार्थिक शिक्षण संस्था, धनराज ओस्तवाल, अध्यक्ष तेरापंथी सभा, बालोतरा तथा कार्यकारिणी सदस्य तेरापंथी महासभा, कमलेश कोचर, मंजु देवी कोचर, इंदु तथा सपना फलसुंड का मार्गदर्शन, सहयोग रहा।

ज्ञानशाला में ज्ञानार्थियों को ज्ञानार्जन देने के लिए प्रियंका देवी लोढ़ा, अनिता देवी लोढ़ा, पायल बुरड़ तथा देवी तातेड़ ने प्रशिक्षण देने का संकल्प व्यक्त किया।

## आचार्य भिक्षु की मासिक तिथि तथा महावीर स्वामी जन्म कल्याणक कार्यक्रम

सिरियारी।

चैत्र शुक्ला त्रयोदशी का दिवस दो-दो विशिष्ट त्योहार लेकर आया। आचार्य भिक्षु की मासिक तिथि तथा महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक वर्ष की तिथि। आचार्य श्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान के द्वारा आयोजित प्रति माह के इस भक्ति रस के कार्यक्रम कुछ विशिष्ट रहे। प्रातःकाल से ही लोगों का उत्साह देखते ही बन रहा था। प्रातःकाल एक रैली का

आयोजन किया गया, जिसमें सैकड़ों लोगों ने भाग लिया, विशेष बात यह थी कि इस रैली में जैनों के साथ जैनेतर लोग भी शामिल थे। कार्यक्रम की शुरुआत भक्तांमर के पाठ से हुई, फिर अणुव्रत गीत प्रार्थना हुई तथा वृहद मंगलपाठ मुनि आकाश कुमार जी के द्वारा हुआ।

रैली के बाद 'खोजें महावीर' प्रतियोगिता का आयोजन हुआ तथा उसके बाद 'महावीर को जानो'

प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। उसमें प्रसन्न कोठारी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। दोपहर के बहुप्रतिक्षित कार्यक्रम 'भिक्षु भक्ति कार्यक्रम' में बाहर से समागत बाल कलाकारों ने मनमोहक प्रस्तुति दी।

दोनों बाल कलाकारों (जयपुर से तनिषा लुणिया तथा आमेत से प्राची कोठारी) की सुमधुर प्रस्तुतियाँ रहीं।

कार्यक्रम में दिल्ली, मंबई-भुज, चैन्नई, गुजरात, हरियाणा, इंदौर, जयपुर, मेवाड़-पाली, मारवाड़ आदि क्षेत्रों के लोग उपस्थित थे। दक्षिण हावड़ा की महिला मंडल की टीम भी उपस्थित रही। दक्षिण हावड़ा महिला मंडल अध्यक्ष चंदकांता पुगलिया, सिरियारी सेवरात पारसमल तथा जयपुर के श्रावक पूनमचंद सिंघवी ने गीत का संगान किया। पाली से समागत राहुल बालड़ ने कार्यक्रम का संचालन किया। सुनित लुणिया ने गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम के अंत में सिरियारी ऑफिस के महावीर ने कलाकारों व प्रसन्न का मोमेंटो के द्वारा सम्मान किया। संपूर्ण कार्यक्रम में अभातेयुप की भागीदारी रही।

## मुनि सिद्धार्थ कुमार जी की तेरह की तपस्या

गुरुकुलवास।

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी के पावन सान्निध्य एवं डॉ० मुनि मदन कुमार जी की प्रेरणा एवं साधु-साध्वियों के सहयोग से कच्छ फतेहगढ़, गुजरात के मुनि सिद्धार्थ कुमार जी ने गुरुकुलवास में गुजरात के अहमदाबाद शहर में गुरुदर्शन के दिवस से ही तपस्या प्रारंभ की।

मुनिश्री की गुरुदेव के गुजरात पदार्पण पर गुरुदेव के लिए उपहार या भेंट त्याग, तपस्या के रूप में कही जा सकती है। मुनिश्री का अभी सातवाँ वर्षीतप चल रहा है। वर्षीतप में 9 से 92 तक की श्रृंखला संपन्न कर चुके हैं। यह तेरापंथ की 93 की तपस्या 22 मार्च को सानंद संनन्न हुई। समण पर्याय में 92 वर्षों में लगभग 50 देशों की यात्रा में अमेरिका 90 बार जा चुके हैं। मुनि पर्याय का वर्तमान में 96वाँ वर्ष चल रहा है।

## वरिष्ठ जन के अनुभवों से समाज लाभान्वित हो सकता है दिल्ली।

वरिष्ठ जन अनुभवों का खजाना होता है। उनके अनुभवों से समाज लाभान्वित हो सकता है। वरिष्ठ जन के मार्गदर्शन से धार्मिक और सामाजिक कार्यों को सुगमता से किया जा सकता है। इस आशय के उद्गार वयोवृद्ध साध्वी शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी ने तेरापंथी सभा, दिल्ली द्वारा समायोजित 'वरिष्ठ जन सम्मान व तप अनुमोदना कार्यक्रम' में प्रकट किए।

इस कार्यक्रम में शासनश्री साध्वी शीलप्रभा जी व समणी मंजुप्रज्ञा जी के भी उद्बोधन हुए। कार्यक्रम में 20 वर्ष व उससे ऊपर की वय के श्रावक-श्राविकाओं को सम्मानित किया गया तथा 95 व ऊपर के तपस्या वालों की अनुमोदना की गई। लगभग 980 से अधिक लोगों को सम्मानित किया गया। समाज भूषण मांगीलाल सेठिया, वरिष्ठ श्रावक टोडरमल लालाणी, हनुमानमल कोठारी आदि ने संस्मरणात्मक वक्तव्य प्रस्तुत किए। सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने सभी का स्वागत, अभिनंदन व तप अनुमोदना की।

कार्यक्रम संयोजक नत्थुराम जैन व पूर्वाध्यक्ष तेजकरण सुराणा के प्रासंगिक वक्तव्य हुए। महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने सभी का आभार ज्ञापन किया। महिला मंडल ने गीत प्रस्तुत किया। संचालन संयोजक प्रदीप संचेती ने किया। कार्यक्रम की सफलता में बाबूलाल दुगड़, सुभाष सेठिया, अशोक संचेती, संजय संचेती, संजीव जैन, विकास बोथरा, विकास सुराणा, सुरेंद्र नाहटा, सुरेंद्र तातेड़, राजेश बैगाणी, दीपक जैन, अरविंद दुगड़, प्रमोद संचेती, प्रसन्न पुगलिया, पवन डोसी आदि अनेक कार्यकर्ताओं का श्रम रहा। सम्मान करने वालों में पन्नालाल बैद, गोविंद बाफना, सुशील कुहाड़, पुखराज सेठिया, शांति कुमार जैन आदि शामिल थे।

कार्यक्रम से सभी वरिष्ठजन प्रसन्नता का अनुभव कर रहे थे। उन्हें स्मृति स्वरूप उनका फोटो भी तत्कालमय फ्रेम उपलब्ध करवाया गया।



## अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर कार्यक्रम

मदुरै।

अभातेमम के तत्वावधान में तेमम द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में प्रेरणा सम्मान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सक्कूबाई, मदुरै साउथ गेट वी-५, इंस्पेक्टर ऑफ पुलिस को अपने सेवा प्रदान करने के लिए उनको प्रेरणा सम्मान दिया गया।

अध्यक्ष नयना पारख ने सर्टिफिकेट एवं मोमेंटो से उनका सम्मान किया। मंत्री दीपिका फूलफगर ने शॉल से उनका सम्मान किया और साथ में महिला मंडल के कार्यों की जानकारी प्रदान की साथ में वुमेन्स डे पर उन्हें सम्मान करने की विशेषता भी बताई। उनके साथ अन्य लेडी इंस्पेक्टर के साथ भी वुमन एम्पावरमेंट के बारे में अच्छी चर्चा हुई।

## पॉवर ऑफ साइलेंस कार्यशाला

बाली बेलुड़ (हावड़ा)।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में अभातेमम के निर्देशानुसार स्थानीय तेमम के सहयोग से पॉवर ऑफ साइलेंस कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि साधना का प्रवेश द्वार है—मौन। मौन कलह मुक्ति का अचूक उपाय है। मौन से ऊर्जा का संचय होता है। मौन से आंतरिक शक्तियाँ उद्घाटित होती हैं।

मुनिश्री ने आगे कहा कि मन, वचन, काया तीन शक्तियाँ हैं। उसमें वचन की शक्ति का व्यवहार में बहुत बड़ा मूल्य है। वचन की शक्ति पूर्ण रूप से मनुष्य के पास होती है। विचारों का आदान-प्रदान वचन के द्वारा होता है। वचन जितना शिष्ट व सभ्य होगा, उतनी ही घर-परिवार में शांति रहेगी।

मुनिश्री ने प्रेरणा के रूप में कहा कि मौन से तनाव दूर होता है, सोचने की क्षमता बढ़ती है, कार्यक्षमता बढ़ती है, वचन का संयम होता है शुभभावों का विकास होता है मौन एक प्रकार की चिकित्सा है। इसलिए व्यक्ति को मौन की साधना करनी चाहिए। तेमम की मंत्री अंकिता लुणिया ने अपने विचार रखे।

## महिला मंडल द्वारा प्रेरणा सम्मान समारोह हैदराबाद।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम के तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 'प्रेरणा सम्मान' समारोह डी०वी० कॉलोनी स्थित तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। सम्मान समारोह दो

# महिला मंडल के विविध आयोजन

चरणों में आयोजित किया गया। मंडल संरक्षिका सुशीला संचेती ने 'तालमेल' के तहत आयोजित एक दिवसीय प्रदर्शनी का उद्घाटन रीबन खोलकर किया गया।

मंगलाचरण का संगान मंडल की बहनों द्वारा किया गया। अध्यक्ष अनीता गिडिया ने सभी स्वागत किया। संरक्षिका सुशीला संचेती, विमलेश सिंधी, सिकंदराबाद सभा अध्यक्ष बाबूलाल बैद, तेयुप अध्यक्ष वीरेंद्र घोषल, अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रकाश भंडारी, टीपीएफ प्रतिनिधि वर्षा बैद ने शुभकामनाएँ प्रेषित की। मुख्य वक्ता के रूप में शशि नाहटा का सम्मान किया गया।

कुसुम नाहटा ने भी अपने जीवन के पहलुओं पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि का परिचय पूर्व मंत्री अल्पना दुगड़ ने दिया। प्रेरणा सम्मान प्रशस्ति-पत्र का वाचन रूबी दुगड़ ने किया। एडिशनल डिप्टी कमिश्नर सी० सिरिशा राघवेंद्रा को प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया गया। उन्हें प्रशस्ति पत्र, साहित्य एवं विशिष्ट पट्टा प्रदान किया गया। कार्यक्रम का संचालन अंजु चोरडिया ने किया। आभार ज्ञापन मंत्री श्वेता सेठिया ने किया।

## आंगनबाड़ी में खाद्य सामग्री वितरण

रांची।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर तेमम, रांची के द्वारा एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसके अंतर्गत आंगनबाड़ी केंद्र में कुछ जरूरतमंद महिलाओं को आवश्यक खाद्य सामग्री का वितरण किया गया। आंगनबाड़ी संचालिका ने खाद्य सामग्री के लिए तेमम का आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से सरिता दस्सानी, अनु बोथरा, अंजु बोथरा, मीना नाहटा, सरिता सिंधी, रूबी बांठिया, नेहा बैंगानी, रति बोहरा, पूजा नाहटा, शालिनी बेगवानी, दिशा बैंगानी आदि का योगदान रहा। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए उपस्थित सभी सदस्यों का मंत्री पूजा नाहटा ने आभार एवं अनुमोदना व्यक्त की।

## अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर कार्यक्रम

कांकरोली।

प्रजा विहार के प्रांगण में तेमम के बैनर तले साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' कार्यक्रम आयोजित हुआ। डॉ० साध्वी परमयशा जी ने कहा कि नारी में दुनिया के तीन प्रमुख देव—ब्रह्मा, विष्णु, महेश रहते हैं। नारी की एक शानदार परिभाषा है—न+अरी = नारी। यानी जिसका कोई शत्रु नहीं होता। महिला

अपनी सोच, चिंतन, मनन से परिवार का सौभाग्य बढ़ाती है।

डॉ० साध्वी परमयशा जी, साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी मुक्ताप्रभा जी और साध्वी कुमुदप्रभा जी ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र से करवाई। साध्वी विनम्रयशा जी ने कहा कि नारी समाज निर्माण के लिए कंप्यूटर है, विकास के लिए इंटरनेट है, वेबसाइट पर अपना वर्चस्व स्थापित करने में नारी सफल हुई है। मंडल की बहनों ने मंगलाचरण किया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर तेमम की अध्यक्ष डॉ० इन्द्रा पगारिया ने अतिथियों एवं उपस्थित बहनों का स्वागत किया। कार्यक्रम में मेवाड़ प्रभारी, अभातेमम सदस्य डॉ० नीना कावडिया ने महिला सशक्तिकरण पर कविता के माध्यम से अपने विचार रखे। सब इंस्पेक्टर, सीआईडी इंटेलेजेंट ब्यूरो की इंस्पेक्टर शीला चौधरी ने क्राइम के बारे में बताया।

कार्यक्रम में प्रेरणा सम्मान का वाचन कन्या सुरक्षा प्रभारी नीता सोनी ने किया। उसके पश्चात सब इंस्पेक्टर शीला चौधरी का तेमम, कांकरोली द्वारा ओपरना, साहित्य और मोमेंटो देकर प्रेरणा सम्मान किया गया।

कार्यक्रम में कांकरोली मंडल की ३५ व्यवसायिक महिलाओं को सम्मान प्रदान किया गया। डिंपल सोनी ने अपने घर और व्यवसाय के बीच तालमेल कैसे बनाए रखें, उसके बारे में विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन उषा कोठारी एवं स्वीटी वागरेचा ने किया। मंडल की मंत्री मनीषा कच्छारा ने सभी अतिथियों का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम के अंत में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में लक्की ड्रॉ गेम भी आयोजित किया गया।

## उत्सव के रंग रिश्तों के संग कार्यक्रम

अमराईवाड़ी।

अभातेमम के निर्देशन में तेमम, अमराईवाड़ी द्वारा 'उत्सव के रंग रिश्तों के संग' कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के साथ उपासिका मंजु गेलड़ा ने की। महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत के द्वारा मंगलाचरण किया।

अध्यक्षा संगीता सिंधवी ने स्वागत वक्तव्य देते हुए ननद-भाभी के रिश्ते पर अपने विचार व्यक्त किए।

उपासिका मंजु ने बताया कि परिवार में रिश्तों का बड़ा महत्त्व है। ननद-भाभी का रिश्ता बहुत ही प्यारा होता है। दोनों बहन-बहन जैसे, अच्छी दोस्त बनकर रह सकती हैं।

कुछ ननद-भाभी की जोड़ियों ने अपने

अनुभव शेयर किए। सुरभि-प्रेक्षा, रेखा-आशा, कोमल-लक्ष्मी, सुशीला-उषा, पूनम-मंजु, जया-मंजु ने अपने विचार रखे। कन्या मंडल प्रभारी रितिका गेलड़ा ने कन्या मंडल के कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी एवं नारी लोक का वाचन किया।

कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन मंत्री लक्ष्मी सिसोदिया ने किया। कार्यक्रम में महिला मंडल की ३१ बहनों एवं कन्या मंडल की ६ कन्याओं की उपस्थिति रही।

## नारी ममता और समता की प्रतिमूर्ति

बालोतरा।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम के तत्वावधान में शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी के सान्निध्य में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। महिला मंडल मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला देवी संकलेचा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी ने कहा कि नारी ममता और समता की प्रतिमूर्ति है। नारी परिवार व समाज की रीढ़ है। नारी स्वस्थ तो परिवार भी स्वस्थ होगा।

साध्वी यशस्वीप्रभा जी ने नारी की महत्ता पर प्रकाश डाला। केंद्र के निर्देशानुसार प्रेरणा सम्मान का कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। जिसमें कांस्टेबल अचली चौधरी को सम्मानित किया गया। प्रेरणा सम्मान का वाचन उपाध्यक्ष चंद्रा बालड़ ने किया। नीतू कांकरिया, राजल जीरावला और मीना भंसाली ने अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर सभी व्यवसायी बहनों को महिला मंडल की तरफ से सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन संगीता बोथरा और आभार ज्ञापन इंदु भंसाली ने किया। इस अवसर पर महिला मंडल के पदाधिकारीगण, परामर्शक मंडल और अन्य महिलाएँ उपस्थित थीं।

## अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सम्मान समारोह का आयोजन

राजराजेश्वरी नगर।

अभातेमम द्वारा निर्देशित तेमम आरआर नगर के निर्देशन में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस तालमेल एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। महिला मंडल की अध्यक्षा लता बाफना

ने सभी का स्वागत किया। शासनमाता साध्वी कनकप्रभाश्री जी की प्रथम वार्षिक पुण्यतिथि के अवसर पर संपूर्ण महिला समाज की ओर से श्रद्धान्तु भावांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ० सीमा, कविता एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य कटारिया को आमंत्रित किया गया। आरआर नगर की बहनें विभिन्न प्रकार के कार्य घरों से करती हैं। ऐसी बहनों के डेटा कलेक्ट करके एक फोल्डर बनाया गया, जिसमें बहनों के नाम, कार्य एवं फोन नंबर की जानकारी है। समारोह में पधारी बहनों को सम्मानित किया गया।

विशेष रूप से रश्मि बोथरा, रुचि बोथरा, कविता बैद, सीमा भंसाली, नीलम डागा जो लंबे समय से कार्य कर रही हैं, विशेष रूप से अपना एक्सपीरियंस बताया कि किस प्रकार घर और काम में तालमेल रखती हैं। अतिथि का परिचय सीमा दक और निहारिका बैद ने दिया। कार्यक्रम का संचालन संयोजिका पूनम दुगड़ ने किया तथा आशा लोढ़ा ने सभी का आभार ज्ञापित किया।

## आचार्य महाश्रमण फिजियोथैरेपी सेंटर एवं कन्या सुरक्षा बैच का उद्घाटन समारोह

राजाजीनगर।

अभातेमम के तत्वावधान में तेमम द्वारा तेयुप, राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम में जैन संस्कार विधि से आचार्य महाश्रमण फिजियोथैरेपी सेंटर एवं कन्या सुरक्षा बैच का उद्घाटन हुआ। संस्कारक राजेश देरासरिया एवं रनीत कोठारी ने विभिन्न मंगल मंत्रोच्चार से जैन संस्कार विधि को संपन्न करवाते हुए नमस्कार महामंत्र का जाप किया।

अभातेमम राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए राजाजीनगर महिला मंडल द्वारा संपादित कार्यों की सराहना करते हुए शुभकामनाएँ प्रेषित की। तेयुप अध्यक्ष अरविंद गन्ना ने अपने विचार व्यक्त करते हुए महिला मंडल परिवार को शुभकामनाएँ दीं। अभातेमम के पूर्व महामंत्री वीणा बैद, कार्यकारिणी सदस्य लता जैन, राजाजीनगर महिला मंडल अध्यक्ष चेतना वेदमूथा, उपाध्यक्ष उषा चौधरी, मंत्री सीमा श्रीश्रीमाल एवं महिला मंडल परिवार की उपस्थिति रही।

इस अवसर पर तेरापंथ ट्रस्ट उपाध्यक्ष अशोक चौधरी, तेयुप परामर्शक प्रवीण नाहर, सुनील बाफना, चंद्रेश मांडोत, निवर्तमान अध्यक्ष मनोज मेहता, अध्यक्ष अरविंद गन्ना, कमलेश गन्ना, भावेश मूथा, महावीर मेहता, डॉक्टर की उपस्थिति रही।

◆ आदमी को अपनी सुख-संपदा दूसरों के मालिकाना में नहीं देनी चाहिए। स्वयं की प्रसन्नता स्वयं के हाथ में रहे, ऐसी साधना होनी चाहिए।

—आचार्यश्री महाश्रमण

5



अखिल भारतीय  
तेरापंथ टाइम्स

10 - 16 अप्रैल, 2023

## शासनमाता का जीवन सबके लिए प्रेरणादायक था

कादिवली (मुंबई)।

शासनश्री साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' के सान्निध्य में होली चातुर्मास एवं शासनमाता की प्रथम पुण्यतिथि का आयोजन किया गया। कादिवली तेममं के मंगलाचरण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। मलाड तेरापंथी सभा के अध्यक्ष इंद्रमल कच्छारा, कादिवली तेयुप के अध्यक्ष नवनीत कच्छारा, कादिवली तेममं की सह-संयोजिका अलका पटावरी आदि ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की।

प्रेक्षा प्रशिक्षिका पारसमल दुगड़ ने रंगों के आधार पर ध्यान का प्रयोग करवाया। साध्वी मृदुयशा जी ने कविता के माध्यम से रंगों पर प्रकाश डाला।

साध्वी विद्यावती जी ने होली से संबंधित घटना पर प्रकाश डाला एवं होली के रंग आत्मा के संग विषय की सुंदर व्याख्या करते हुए आठ कर्मों की होली खेलने का आह्वान किया। शासनश्री साध्वीश्री जी ने शासनमाता के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उनके व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को शब्दों में उजागर किया।

साध्वी प्रेरणाश्री जी ने गीत का संगान किया। कादिवली तेरापंथ कन्या मंडल ने शासनमाता के इंद्रधनुषी व्यक्तित्व पर इंद्रधनुष नामक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी।

साध्वी प्रियंवदा जी ने कहा कि साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की श्रमनिष्ठा, विनय निष्ठा, समर्पण निष्ठा एवं

गुरु निष्ठा बेमिशाल थी। सैकड़ों साधु-साध्वियों के जीवन को उन्होंने प्रेरणा पाथेय से लाभान्वित कर विकास का मार्ग प्रशस्त किया।

श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के अध्यक्ष विनोद बोहरा ने शासनमाता के प्रति श्रद्धांजलि संप्रेषित की। मुंबई तेममं की अध्यक्ष रचना हिरण एवं कादिवली तेरापंथ सभा के अध्यक्ष पारसमल दुगड़ ने भी होली पर्व की शुभकामनाएँ देते हुए शासनमाता को भावांजलि समर्पित की। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीवृंद द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। दो चरणों में आयोजित कार्यक्रम का संचालन डॉ० साध्वी ऋद्धियशा जी ने किया।

## भगवान ऋषभदेव का दीक्षा कल्याणक

हैदराबाद।

ज्ञानबाग हैदराबाद में नंदलाल वैद के निवास स्थान पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में भगवान ऋषभदेव का दीक्षा कल्याणक मनाया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि साधना के लिए प्रसन्नता आवश्यक है। बाध्य प्रसन्नता स्थायी नहीं होती। शाश्वत और आनंद के लिए आत्मा के निकट रहना आवश्यक है। महावीर-दर्शन जीवन में उतारने का प्रयास करना चाहिए। अध्यात्म और धर्म की आराधना करने वाला विकट परिस्थितियों में भी रास्ता खोज लेता है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि दुख को परकृत न मानो। जिंदगी में सुखी बनने के लिए परिस्थिति को बदल लीजिए। यदि परिस्थिति न बदल सके तो मनःस्थिति को

बदल लें। आप दुख से बच जाएँगे। सुखी रहने के लिए प्रबल साधना है—संयम का जीवन।

आनंदमय जीवन के लिए तप का मार्ग भी स्वीकार किया जा सकता है। अपनी शक्ति को तप साधना में नियोजित करें। साध्वीश्री जी ने युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के संयम अमृत महोत्सव के अवसर पर परिषद को वर्षीतप करने की

प्रेरणा दी। प्रेरणा से प्रेरित होकर मानकचंद्र रांका एवं ललिता चतुर्मुखा ने अग्रिम वर्षीतप करने का व्रत्याख्यान किया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में साध्वीश्री जी द्वारा आदिनाथ की आराधना में जप-अनुष्ठान कराया गया। जगत पारख ने गीत का संगान किया। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी व साध्वी शौर्यप्रभा जी ने आत्मभाव प्रकट किए।

## पचरंगी सामायिक का आयोजन

हासन।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ सभा भवन में पचरंगी सामायिक साधना का आयोजन हुआ। इस आयोजन में सकल श्वेतांबर समाज ने बड़े ही उत्साह से भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन ममता कोठारी ने किया।

हासन सभा के अध्यक्ष सुरेंद्र तातेड़, हासन महिला मंडल के अध्यक्ष संगीता कोठारी, तेयुप के अध्यक्ष गौरव गुलगुलिया एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।



## अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम	अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
* श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर		5,00,000
* श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना		5,00,000
* श्री राकेश कठोतिया, लाडनू-मुंबई		5,00,000
* श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई		5,00,000
* श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा		5,00,000
* श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत		5,00,000
* श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई		5,00,000
* श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई		5,00,000
* श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा		5,00,000
* श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा		5,00,000
* श्री जैनसुख दीपक बोधरा, छपर-सिलीगुड़ी		5,00,000
* श्री बसंत नवलखा, बीकानेर		5,00,000
* श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर		5,00,000
* श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत		5,00,000
* श्री छत्तरमल गणेशमल विनीतकुमार बैद, राजलदेसर-चेन्नई		5,00,000



## संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

### नामकरण संस्कार

जयपुर।

कृति-प्रवीण जैन की सुपुत्री एवं सीमा-राजेंद्र जैन की सुपौत्री का नामकरण संस्कार संस्कारक श्रेयांस बैंगानी व सौरभ जैन ने मंगलभावना पत्रक स्थापित करवाकर जैन संस्कार विधि से संपन्न करवाया। संदीप भंडारी ने नामकरण पत्रिका का वाचन किया।

जैन संस्कार विधि के संयोजक कुलदीप बैद सहित समाज के अन्य गणमान्य महानुभाव एवं पारिवारिकजनों की उपस्थिति में परिषद् परिवार की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

विजयनगर।

बैंगलोर प्रवासी श्रेयांस-कृतिका की सुपुत्री का नामकरण कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संस्कारक विकास बांठिया ने विधि-विधान एवं मंगल मंत्रोच्चारण से संपन्न करवाया।

परिषद द्वारा बांठिया परिवार को मंगलभावना पत्रक एवं नामकरण पत्रक भेंट किया गया। बांठिया परिवार ने तेयुप, विजयनगर का आभार व्यक्त किया।

### नूतन गृह प्रवेश

गंगाशहर।

शुभकरण-सरोज देवी सिपानी के नूतन गृह का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा जैन संस्कार रतनलाल छलाणी और पीयूष लुणिया ने विधि-विधानपूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चारण के साथ संपन्न करवाया।

सभी ने तेयुप, गंगाशहर द्वारा आयोजित हुए जैन संस्कार विधि के कार्यक्रम की सराहना की। मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम परिसंपन्न हुआ।

### नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

सूरत।

लाडनू निवासी, सूरत प्रवासी राकेश खटेड़ के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष कुमार मालू ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चारण से संपन्न करवाया।

राकेश खटेड़ ने सभी का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक व मंगलकामना पत्र भेंट किया गया।

## आहट उजले कल की, रजत उत्कर्ष पार्ट-२ का आयोजन

घाटकोपर।

साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में रजत उत्कर्ष पार्ट-२ का आयोजन किया गया। 'आहट उजले कल की' कार्यक्रम में उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि सुमंगल साधना श्रावक समाज को आचार्यश्री महाश्रमण जी का अनुपम वरदान है। यह जीवन-भर की विशेष साधना है। हर व्यक्ति का आत्मबल जगे यह संभव नहीं पर तीन प्रतिमा की साधना छह महीने की आंशिक साधना है।

साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने कहा कि सम्यक् दर्शन का दीया जगे बिना उजाला नहीं होगा। ज्ञान और चरित्र तभी सम्यक् होंगे जब दर्शन विशुद्ध होगा। दर्शन विशुद्ध के अनंतर व्रतों का मार्ग खुलता है जो मोक्ष की ओर ले जाता है।

कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से हुई, जिसे रंजना बाफना ने प्रस्तुति दी। उत्कर्ष के संयोजक रतन सियाल, तेरापंथ सभा, मुंबई के कार्याध्यक्ष नवरतनमल गन्ना, शांतिलाल बाफना व हस्तिमल डांगी ने प्रासंगिक अभिव्यक्ति दी। मंच संचालन सह-संयोजक तेजराज बंबोली ने किया। इस अवसर पर सम्यक् दर्शन प्रतिमा से जुड़ने वालों की संख्या ५८ हो गई। कार्यशाला अत्यंत सफल रही।



## भगवान महावीर जयंती पर कार्यक्रमों के आयोजन

### गांधीनगर, दिल्ली

जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, गांधीनगर, दिल्ली द्वारा २६२२वाँ महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, कृष्णानगर में आयोजित किया गया।

प्रभातफेरी के पश्चात कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिश्री के मुखारविंद से नमस्कार महामंत्र से हुआ। निवर्तमान अध्यक्ष अनिल पटवा द्वारा श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया गया। तेयुप के कार्यकर्ताओं, महिलाओं, बहनों एवं ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं द्वारा गीतिकाओं का संगान किया गया। सभा अध्यक्ष कमल गांधी द्वारा स्वागतीय उद्बोधन दिया गया। दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, शाहदरा सभा के अध्यक्ष पन्नालाल बैद, विकास मंच के मुख्य ट्रस्टी धर्मचंद सेठिया, कृष्णा नगर क्षेत्र के पार्षद संजीव कपूर एवं महिला मंडल की अध्यक्ष मंजु जैन आदि ने इस अवसर पर अपना वक्तव्य दिया।

मुनिश्री ने कहा कि अनेकांत, अपरिग्रह के सिद्धांत को अपनाकर जीवन को स्वस्थ बनाया जा सकता है, उन्होंने कहा कि 'स्वयं जागो औरों को जगाओ।'

तेयुप के उपाध्यक्ष अरविंद सिंधी, ओसवाल समाज के अध्यक्ष आनंद बुच्चा, अणुव्रत समिति के मंत्री धनपत नाहटा, दिल्ली सरकार तीर्थ यात्रा समिति के अध्यक्ष कमल बंसल, समाज सेवक एवं पूर्व पार्षद प्रत्याशी जुगल अरोड़ा सहित अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधिगण सहित बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविका समाज इस कार्यक्रम में सहभागी बने। विकास मंच द्वारा भवन उपलब्ध करवाया गया। संयोजक धनेश डूंगरवाल, हनुमान बोथरा, रवि भरुंड एवं अमित बेगवानी सहित अनेक कार्यकर्ताओं का कार्यक्रम में श्रम नियोजित हुआ। महिला मंडल, तेयुप, ज्ञानशाला सहित अन्य संस्थाओं का इसमें विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संयोजन मंत्री हेमराज राखेचा ने किया। संघ गान के साथ कार्यक्रम संपन्न किया गया।

### ग्रीन पार्क, दिल्ली

ग्रीन पार्क गोयल भवन में समायोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि महापुरुष जब धरती पर अवतरित होते हैं। तब शुभ क्षण, शुभ बेला, शुभ नक्षत्र अपने आप आ जाते हैं। महावीर ने चैत्र शुक्ला त्रयोदशी की मध्य रात्रि में उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में जन्म लिया।

उस समय भूमि और आकाश

प्रफुल्लित थे। सब दिशाएँ आलोक से परिपूर्ण थीं। वासंती पवन मंद-मंद गति से बह रही थी। वृक्ष-लताएँ फल-फूलों से लदी हुई थीं।

१२ दिनों के बाद नामकरण संस्कार हुआ। जब वर्धमान नाम रखा गया—कारण कि आप जब गर्भ में आए थे तब से लेकर जन्म तक राज्य में धन-धान्य, स्वर्ण-रजत, मणि-मुक्ता, बल, वाहन आदि में वृद्धि हुई, इस दृष्टि से राजा सिद्धार्थ ने वर्धमान नाम से अभिहित किया।

आपने ३० वर्ष की अवस्था में चढ़ते यौवन में सांसारिक बंधनों का विच्छेद करके चारित्र्य स्वीकार किया। वर्षों तक घोर तपस्याएँ कीं। भीषण संघर्षों को सहन किया। ध्यान-साधना से आत्मदर्शन के सागर में निमज्जन करते हुए कैवल्य ज्ञान उपलब्ध किया। विश्व को अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत का पाठ पढ़ाया।

शासनश्री साध्वी सुव्रतांजी, शासनश्री साध्वी सुमनप्रभा जी एवं साध्वी कार्तिकप्रभा जी ने महावीर के जीवन के संदर्भ में अनेकानेक घटना प्रसंगों का जिक्र किया। साध्वी चिंतनप्रभा जी ने सुमधुर स्वर लहरी से महावीर की अभिवंदना की।

ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने सुंदर प्रस्तुतियाँ दीं। प्रशिक्षिकाओं ने सामूहिक गीत प्रस्तुत किया।

दिल्ली तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, पूर्व अध्यक्ष गोविंद बाफना, दक्षिण दिल्ली तेरापंथ सभा अध्यक्ष हीरालाल गेलड़ा, प्रीतमपुरा तेरापंथ सभा मंत्री सुरेंद्र मालू, अणुव्रत न्यास के अध्यक्ष के०सी० जैन, संजय चोरड़िया, सुरेंद्र सोनी, जैन संस्कार समिति के अध्यक्ष सुशील डागा, माया दुगड़, हेमा चोरड़िया, सपना लालानी, दक्षिण दिल्ली महिला मंडल आदि वक्ताओं ने भावाभिव्यक्ति दी।

दक्षिण दिल्ली तेयुप ने रोचक एवं भावपूर्ण गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन दक्षिण दिल्ली तेरापंथ सभा की मंत्री अरुणा डूंगरवाल ने किया।

### जयपुर

बहुश्रुत परिषद की सदस्य शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में भगवान महावीर जन्म जयंती का कार्यक्रम भिक्षु साधना केंद्र, जयपुर में आयोजित हुआ। नमस्कार महामंत्रोच्चारण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। निधि बोथरा ने महावीर अष्टकम् का संगान किया।

शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी ने कहा कि अनुत्तर योगी भगवान महावीर आनंद के अक्षय स्रोत थे। उनके दर्शन को जीने वाला सदा सहज रूप से आनंदित रह सकता है। भगवान महावीर को महान पर्यावरण विज्ञानी और अहिंसा विज्ञानी

बताते हुए साध्वीश्री जी ने कहा कि जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संकट आज वैश्विक गंभीर समस्याओं में एक है। महावीर के अहिंसा, समय और अपरिग्रह का संदेश और उसका पालन इस समस्या का स्थायी समाधान दे सकता है।

साध्वी मधुलता जी ने कहा कि आधुनिकता के नाम पर जो समाज में विकृतियाँ प्रवेश कर रही हैं, उसके बारे में जैन समाज को गंभीरता से सोचना है और सही कदम उठाना है। इस अवसर पर साध्वी संस्कृतिप्रभा जी ने भगवान महावीर के प्रति भावों की अभिव्यक्ति दी।

तेरापंथी सभा, जयपुर के प्रतिनिधि सुरेंद्र सेठिया, सी-स्कीम महिला मंडल, जयपुर की अध्यक्ष नीरू पुगलिया, कलाकार संपतमल गांधी, प्रज्ञा जैन ने प्रासंगिक विचार रखे। मास्टर प्रतीक लोढ़ा ने गीतिका के द्वारा श्रद्धासुमन अर्पित किए। सी-स्कीम महिला मंडल की महिलाओं ने सुमधुर गीत का संगान किया।

ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी बच्चे—रिवा आंचलिया, मांवी सुराणा ने महावीर स्तुति में कलात्मक प्रस्तुति दी। शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी द्वारा रचित गीतिका का साध्वी मधुलता जी एवं साध्वीवृंद ने संगान किया। कार्यक्रम का संयोजन साध्वी समितिप्रभा जी ने किया। कार्यक्रम में बाल, वृद्ध, युवकों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

### छापर

महावीर जयंती के अवसर पर प्रातः प्रभात फेरी का आयोजन किया गया।

तेरापंथ के अलावा दूसरे समुदाय के लोगों ने भी इसमें भाग लिया। कार्यक्रम का प्रारंभ मुनिश्री के णमोकार महामंत्र के संगान से हुआ।

शासनश्री मुनि विजय कुमार जी ने कहा कि चैत्र शुक्ला १३ का दिन मानव जाति के अभ्युदय का दिन कहा जा सकता है। आज से २६२२ वर्ष पहले इसी दिन युगपुरुष महावीर के त्रिशला क्षत्रियाणी की कुक्षी से जन्म लिया था। राजा सिद्धार्थ ने महावीर के गर्भ में आने के साथ ही राजकोष में धन-धान्य की अपूर्व वृद्धि देखी तो गुणानुरूप वर्धमान नाम से उनको पुकारा जाने लगा।

महावीर ने अहिंसा का उपदेश तो ज्ञान प्राप्ति के बाद दिया था, किंतु गर्भावस्था में ही उन्होंने अहिंसा के सिद्धांत को साकार कर दिया था। उन्होंने संकल्प ले लिया कि मेरे माता-पिता जब तक जीवित रहेंगे, मैं दीक्षा नहीं लूँगा। इस घटना के पीछे उनके भीतर का करुणा भाव झलकता है। उनकी यह सोच कि मैंने कारण से माता-पिता को किसी तरह का मानसिक संक्लेश नहीं होना चाहिए, यह शिक्षा अगर आज की संतान अपने जीवन में उतार ले तो अहिंसा का स्रोत हर घर में प्रवाहित हो सकता है।

महावीर का बचपन बीता, यौवन की दहलीज पर कदम धरे। वे शादी नहीं करना चाहते थे, पर माता-पिता के अत्यधिक आग्रह के कारण यशोदा नाम की राजकुमारी के साथ उन्होंने विवाह किया। फिर भी वे विरक्ति का जीवन जी रहे थे। २८ वर्ष की

आयु में माता-पिता के दिवंगत होने के बाद ज्येष्ठ भ्राता नंदीवर्धन के कहने से महावीर ने ३०वें वर्ष में दीक्षा स्वीकार की। साढ़े १२ वर्ष का उनका साधना काल बड़ा कष्टप्रद और घोर उपसर्गों से भरा हुआ था। लेकिन महावीर उन कठिन-कठिनतम परिस्थितियों में भी मेरु की तरह अविचल रहे। जब महावीर लगभग साढ़े ४२ वर्ष के हुए तो उनका संकल्प सिद्ध हुआ और उनको परम ज्ञान की प्राप्ति हुई।

उन्होंने अहिंसा को शाश्वत धर्म बताया। भगवान महावीर ने अपने प्रवचनों में अपरिग्रह, अनेकांत, दास प्रथा का उन्मूलन, जातिवाद की अतात्त्विकता, पशु बलि का विरोध, नारी जाति की समानता आदि सिद्धांतों पर बल दिया। उस युग की समस्याओं का उन्होंने समाधान दिया।

शासनश्री मुनिश्री ने महावीर की अभ्यर्थना में गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण किया। अणुव्रत विद्यालय की छात्राओं ने गीत की प्रस्तुति दी। तेरापंथी सभा के मंत्री चमन दुधोड़िया, कवि गौरी शंकर भावुक, जीवराज सिंह, सूरजमल नाहटा, चैनरूप दायमा, रेखा राम गोदारा, सपना बैद, ज्योति दुधोड़िया तथा ज्ञानशाला के बच्चों ने गीत व वक्तव्य के द्वारा भगवान महावीर की अभ्यर्थना की। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रदीप सुराना ने संयोजन किया। मंत्री विनोद नाहटा ने आभार ज्ञापन किया।

## संस्कार निर्माण अणुव्रत जीवन विज्ञान

### सिकंदराबाद।

श्रद्धा की प्रतिमूर्ति अणुव्रत सेवी निर्मला बैद ने गवर्नमेंट बॉयज हाईस्कूल, सिकंदराबाद में अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान का कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम का प्रारंभ तुलसी अष्टकम् से किया गया। उन्होंने बताया कि आज की शिक्षा पद्धति अधूरी है। बौद्धिक व शारीरिक विकास हो रहा है। भावनात्मक विकास नहीं होने से शिक्षा में समस्याएँ पैदा हो रही हैं। अच्छे डॉक्टर, वकील, इंजीनियर बन रहे हैं। परंतु चरित्र संपन्नता नहीं होने के कारण समस्याएँ बढ़ रही हैं। भावनात्मक विकास के लिए पूज्यप्रवर द्वारा चलाया गया जीवन-विज्ञान बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। कैसे जीना, समय का मैनेजमेंट कैसे करना, अन्य अनेकों बातें बताई गईं।

व्यसनमुक्त जीवन, सांप्रदायिक सद्भावना, ईमानदारी तीनों के बारे में उदाहरण द्वारा बताया। प्रेक्षाध्यान के प्रयोग दीर्घश्वास, ज्योतिकेंद्र, महाप्राण ध्वनि के प्रयोग करवाए।

अणुव्रत अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में पूरे वर्ष अणुव्रत कार्यक्रम पूरे देश में चल रहे हैं। अध्यात्म जगत के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी की यात्रा का नाम 'अणुव्रत यात्रा' घोषित किया गया है। गणाधिपति गुरुदेव तुलसी के आंदोलन की ज्यादा से ज्यादा प्रभावना हो तभी सार्थकता है। अणुव्रत गीत के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

प्रिसिपल स्वरूपा, अध्यापक रामोजी, मेडम ज्योति, पद्मा, दीपांजी का पूरा सहयोग रहा। हनुमान जितेंद्र बैद की तरफ से सामान, बुक्स वगैरह दिया गया।

◆ आदमी को परिस्थिति सापेक्ष खुशी में ज्यादा लयलीन नहीं होना चाहिए और परिस्थिति सापेक्ष समस्या में ज्यादा दुःखी भी नहीं बनाना चाहिए।

## अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम अमराईवाड़ी।

अभातेमम के निर्देशन में तेममं द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। उपासिका मंजु गेलड़ा ने कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की। महिला मंडल की बहनों ने गीतिका के द्वारा मंगलाचरण किया।

अध्यक्ष संगीता सिंघवी ने कहा कि हम खूब विकास करें, लेकिन हम अपने नैसर्गिक गुणों—समता, ममता, सहनशीलता, विनम्रता, श्रद्धा, समर्पण आदि को अपने भीतर में विद्यमान रखें।

कार्यक्रम की मुख्य वक्ता रितिका गेलड़ा ने महिलाओं से संबंधित परेशानियों के बारे में समाधान दिया। कन्या मंडल की कन्याओं ने भी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मंत्री लक्ष्मी सिसोदिया ने किया एवं आभार ज्ञापन वंदना पगारिया ने किया।

### रिसड़ा।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में अभातेमम के निर्देशन में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर प्रेरण सम्मान एवं तालमेल कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि पुलिस सुपरिटेण्डेंट पियाली विश्वास, मुख्य वक्ता मुख्य ट्रस्टी अभातेमम सूरज बरड़िया, प्रेरक वक्ता मोटिवेशनल स्पीकर पूजा रितु बोधरा, राष्ट्रीय बंगाल प्रभारी सोनम बागरेचा, पार्षद शशि सिंह आदि गणमान्य महिलाओं की उपस्थिति रही।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि नारी ममता का मंदिर, दिल का दरिया, विनय का वैभव, समर्पण की साधना है। त्याग उसका स्वभाव प्रधान उसका धर्म है।

इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा कि स्त्री का संकल्प हो कि मैं स्त्री के गौरव को नहीं गिरने दूँगी तो प्रेरणा सम्मान और तालमेल दोनों हो जाएगा।

बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि पियाली विश्वास ने कहा कि एक नारी ही है जो घर और बाहर दोनों संभालती है। तेममं ने जो मुझे प्यार और सम्मान दिया उसके लिए मैं आभार व्यक्त करती हूँ।

मुख्य वक्ता सूरज बरड़िया ने कहा कि भारतीय महिला होना गौरव की बात है। रिषड़ा महिला मंडल ने यह कार्यक्रम रखा साहस एवं उत्साह का परिचय दिया है। प्रेरक वक्ता पूजा रितु बोधरा ने कहा कि तालमेल एवं नारी सशक्तिकरण के लिए जरूरी है—विनम्रता, वत्सलता, कार्य-कुशलता, संवाद शैली, संवेदनशीलता, गुरु निष्ठा और समर्पण।

पार्षद शशि सिंह ने कहा कि समाज को आगे ले जाने का दायित्व महिला शक्ति

## श्री महिला मंडल के विविध आयोजन

पर है। शाखा प्रभारी सोनम बागरेचा ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का शुभारंभ तेममं की बहनों के प्रेरणा गीत के संगान से हुआ। स्वागत भाषण तेममं की अध्यक्ष सूर्या महनोत ने किया। महिला मंडल पर तेममं की सदस्याओं ने व कन्या मंडल ने गीत का संगान किया।

आभार ज्ञापन मंत्री सुनिता सुराणा ने किया। कार्यक्रम का संचालन मधु महनोत ने किया। इस अवसर पर पुलिस सुपरिटेण्डेंट पियाली विश्वास का तेममं, रिसड़ा द्वारा प्रेरणा सम्मान किया गया। इस अवसर पर कई शाखा मंडलों की बहनों की उपस्थिति रही।

### हासन।

अभातेमम के निर्देशानुसार हासन तेरापंथ भवन में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर प्रेरणा पुरस्कार एवं तालमेल बैलेंसिंग वर्क होम कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र और फिर प्रेरणा गीत से किया गया। महिला मंडल के अध्यक्ष संगीता कोठारी ने पधारी हुई बहनों और हर कांस्टेबल नेत्रावती और भवानी का स्वागत करते हुए जीवन का परिचय दिया।

पूजा कोठारी ने तालमेल पर अपने विचार व्यक्त किए। मुख्य अतिथि महिला हेडकांस्टेबल ने भी सुंदर ढंग से अपने एक्सपीरियंस को बहनों के साथ साझा किया। मुख्य अतिथियों को प्रेरणा सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया। पूजा कोठारी ने भी साहित्य देकर सम्मानित किया।

सूरत तातेड़ ने महिला पर कविता प्रस्तुत किया। सीमा तातेड़, राजुल भंसाली ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन विनीता सुराणा ने कविता के माध्यम से किया। अंत में पिकी गुलगुलिया ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम में बहनों ने अच्छी संख्या में भाग लिया।

### तिरुकल्लीकुंड्रम।

महिला मंडल ने साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। व्याख्यान के समय भारत की 98 प्रसिद्ध महिलाओं पर एक प्रस्तुति दी गई। दूसरे चरण में साध्वीश्री जी के नवकार मंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। सभी बहनों ने मंगलाचरण में प्रेरणा गीत का संगान किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कोमल सुराणा थी, जिन्हें हाल ही में बैंगलोर में अखिल भारतीय स्तर पर अवार्ड से सम्मानित किया गया। साध्वीश्री जी ने नवकार मंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की। तेममं अध्यक्ष लताबाई बरलोटा ने सभी बहनों का स्वागत किया। उर्मिला बरलोटा,

दिव्या मरलेचा ने महिला दिवस पर अपनी भावना व्यक्त की।

साध्वी दर्शितप्रभा जी ने भी नारी के उन्नयन पर अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी लावण्यश्री जी ने बहनों को यही शिक्षा दी कि बेटियों को इस प्रकार के संस्कार दें कि वह आगे जाकर अपने परिवार का नाम रोशन करें।

कोमल का सम्मान सभाध्यक्ष संपतराज वरोला, महिला मंडल अध्यक्ष लताबाई बरलोटा, मंत्री सरिता वरोला ने किया। हर वर्ष की तरह इस साल भी 90वीं, 92वीं में उत्तीर्ण बच्चे पलक बरलोटा, संस्कृति वरोला, निहाल मरलेचा का सम्मान किया गया। धन्यवाद ज्ञापन किरण दुगड़ ने किया एवं मंच संचालन स्वाति वरोला ने किया।

### सरदारपुरा, जोधपुर।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेममं द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी कुंदनप्रभा जी ने नमस्कार महामंत्र के द्वारा किया। मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत से किया।

अध्यक्ष सरिता काकरिया ने पधारी हुई अतिथि एवं बहनों का स्वागत किया। कार्यक्रम के प्रथम चरण में बिजनेस वूमन डिंपल शाह ने बताया कि कैसे व्यावसायिक महिला गृह एवं व्यवसाय में तालमेल बनाएँ।

मंडल की व्यावसायिक महिला ज्योति सिंघवी ने हाउ टू ग्रो बिजनेस के टिप्स बताए। एस०एच०ओ० राजस्थान पुलिस किरण गोदारा ने कहा कि महिला बहुत स्ट्रॉंग होती है, सक्षम होती है, वह सब कुछ कर सकती है। जो वो चाहती है। भगवान ने महिला को इतना सक्षम बनाया है कि वह अपने बलवृत्ते पर बहुत कुछ कर सकती है, पर महिला में अहंकार नहीं आना चाहिए और उसकी दिशा सही होनी चाहिए।

साध्वी चारित्रप्रभा जी ने गीतिका के द्वारा अपने भाव प्रकट किए। साध्वी विद्युत्प्रभा जी ने कहा कि नारी न अर है न आरी, जीवन की क्यारी है, श्रद्धा की फुलवारी है।

प्रचार-प्रसार मंत्री चेतना जैन ने एस०एच०ओ० किरण गोदारा का परिचय दिया। संतोष मेहता ने प्रेरणा सम्मान पत्र का वाचन किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ० प्रियंका बैद ने किया। आभार ज्ञापन अभातेमम की एसोसिएट मेंबर मोनिका चोरड़िया ने किया।

## महिला परिवार, समाज, देश की धूरी चेंनई।

अभातेमम के तत्वावधान में तेममं, चेंनई द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर

तालमेल-बैलेंसिंग वर्क एंड होम और प्रेरणा सम्मान समारोह कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ भवन, साहूकारपेट, चेंनई में आयोजित किया गया।

सामुहिक नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत से मंगलाचरण किया। तेममं अध्यक्ष पुष्पा हिरण ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किया।

विशिष्ट अतिथि ब्रिगेडियर एस० जयलक्ष्मी ने अपने जीवन की यात्रा को बताते हुए प्रेरणा दी कि आप किसी भी कार्य को चिंतन करके हाथ में लें और जिस लक्ष्य का आपने निर्धारण किया, उस दिशा में दृढ़ता से आगे बढ़ें। महिलाओं के लिए रोल मॉडल ब्रिगेडियर एस० जयलक्ष्मी को अभातेमम की ओर से प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया गया।

मुख्य अतिथि डॉ० शोभना वर्धमान ने कहा कि महिलाएँ चाहे परिवार हो, समाज हो, देश हो या अन्य क्षेत्र, हर जगह वह धूरी के रूप में कार्य करती है।

प्रिंट मीडिया पार्टनर राजस्थान पत्रिका, चेंनई के हेड विजय राघवेंद्र, अभातेमम राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्या माला कातरेला, स्वरूपचंद दांती ने अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल मंत्री रीमा सिंघवी ने कार्यक्रम का संचालन किया। अतिथियों का महिला मंडल की ओर से अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम में कोषाध्यक्ष हेमलता नाहर ने व्यापार और परिवार में सामंजस्य के साथ कैसे आगे बढ़ें, सात बिंदुओं के साथ समझाया। सहमंत्री कंचन भंडारी, लता पारख ने मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि का परिचय दिया। संरक्षिका निवर्तमान अध्यक्ष कमला गेलड़ा ने प्रेरणा सम्मान पत्र का वाचन किया। कार्यक्रम की संयोजना में संयोजिका प्रीति डूंगरवाल, वंदना पगारिया के साथ महिला मंडल की बहनों का विशेष श्रम रहा। धन्यवाद ज्ञापन सुभद्रा लुणावत ने दिया।

## सत्संगत पर कार्यशाला का आयोजन

### हासन।

अभातेमम के निर्देशानुसार स्थानीय तेममं, हासन द्वारा पाँचवाँ चरण परोपकार और छठा चरण सत्संगत पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

सरकारी प्रौढ़शाला में नमस्कार महामंत्र के द्वारा सामूहिक रूप से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। अध्यक्ष संगीता कोठारी ने बच्चों और शिक्षिकाओं का स्वागत करते हुए विषय परोपकार और सत्संगत पर प्रकाश डाला। जयंती सुराणा ने बच्चों से महाप्राण ध्वनि कराई। नम्रता

सुराणा ने परोपकार पर कहानी सुनाई। उमा तातेड़ ने सत्संगति पर अपने विचारों की प्रस्तुति दी।

आभार ज्ञापन करते हुए विनीता सुराणा ने सभी का धन्यवाद किया।

## उम्मीद एक बेहतर कल की कार्यशाला

### हासन।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेममं द्वारा रवींद्र सरकारी स्कूल में उम्मीद एक बेहतर कल की के अंतिम चरण मीठी वाणी की कार्यशाला रखी गई। नमस्कार महामंत्र के द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की गई। अध्यक्ष संगीता कोठारी ने सभी का स्वागत किया। रेखा सुराणा ने जीवन में वाणी का महत्त्व पर विचार रखे। इसी कड़ी में शर्मिला तातेड़ ने कहा कि प्रेमी और विश्वास की भावना से मीठी वाणी बोलना चाहिए।

संतोष भंसाली ने कहानी के माध्यम से अपने विचार रखे। नवयुवती बहनों ने सुंदर लघु नाटिका प्रस्तुत की। प्रिंसिपल ने सभी महिला मंडल की बहनों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का आभार ज्ञापन ललिता सुराणा ने किया। प्रिंसिपल का शॉल और माला से सम्मान किया गया। बच्चों को पुरस्कार देकर कार्यक्रम का समापन किया गया।

## लाइब्रेरी का उद्घाटन

### भीलवाड़ा।

अभातेमम के निर्देशन में तेममं, भीलवाड़ा द्वारा समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत फीड द माइंड राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सुभाष नगर में लाइब्रेरी का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार महामंत्र के उच्चारण से हुआ।

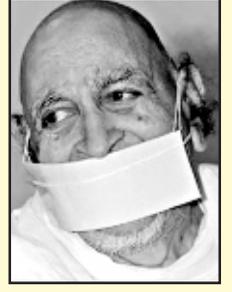
तेममं अध्यक्ष मीना बाबेल ने स्वागत वक्तव्य दिया। मुख्य अतिथि जिला शिक्षा अधिकारी कैलाश तिवारी ने विचार व्यक्त किए। राष्ट्रीय सहमंत्री नीतू ओस्तवाल ने प्रोजेक्ट की संक्षिप्त जानकारी दी। प्रिंसिपल उर्मिला जोशी ने स्कूल लाइब्रेरी में पुस्तकें डोनेट करने हेतु तेममं के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन प्रोजेक्ट संयोजिका आनंदबाला टोडरवाल ने किया। महिला मंडल मंत्री रेणु चोरड़िया ने स्कूल स्टाफ एवं समागत अतिथियों का आभार प्रकट किया। लाइब्रेरी लोकार्पण में चंचल प्रवीण वूलिया का आर्थिक सहयोग रहा।

प्रोजेक्ट सह-संयोजिका सुमन दुगड़ का व्यवस्थाओं में सहयोग रहा। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष जसराज चोरड़िया, मंत्री योगेश चंडालिया, पार्षद जगदीश गुजर, महिला मंडल उपाध्यक्ष मैना कांटेड, डॉ० राजमति सुराणा, सुमन लोढ़ा आदि की उपस्थिति रही।



## मनोनुशासनम्

□ आचार्य तुलसी □



### कायोत्सर्ग की विधि

कायोत्सर्ग बैठी, खड़ी और सोयी-तीनों मुद्राओं में किया जा सकता है। इसकी पहली प्रक्रिया शिथिलीकरण है। यदि आप बैठे-बैठे कायोत्सर्ग करना चाहते हैं तो सुखसन या पद्मासन लगाकर या पालथी बाँधकर बैठ जाइए। दोनों हाथों को या तो घुटनों पर टिकाए या बायीं हथेली पर दायीं हथेली रखकर उन्हें अंक में रखिए। फिर पृष्ठवंश (रीढ़ की हड्डी) और गर्दन को सीधा कीजिए। यह ध्यान रहे कि उनमें न झुकाव हो और न तनाव हो। वे शिथिल भी रहें और सीधे-सरल भी। फिर दीर्घश्वास लीजिए। श्वास को उतना लंबाईए जितना बिना किसी कष्ट के लंबा सकें। इससे शरीर और मन दोनों के शिथिलीकरण में बड़ा सहारा मिलेगा। आठ-दस बार दीर्घ श्वास लेने के बाद वह क्रम सहज हो जाएगा। फिर शिथिलीकरण में मन को लगाइए। स्थिर बैठने से कुछ-कुछ शिथिलीकरण तो अपने आप हो जाता है। फिर विचारधारा द्वारा प्रत्येक अवयव को शिथिल कीजिए। मन को उसी अवयव में टिकाइए, जिसे आप शिथिल कर रहे हैं। अवयवों को शिथिल करने का क्रम यह रखिए—गर्दन, कंधा, छाती, पेट—दायें, बायें, पृष्ठभाग, भुजा, हाथ, हथेली, अंगुली, कटि, टाँग, पैर-अंगुली। फिर मांसपेशियों को शिथिल कीजिए। मन से शरीर के भाग और मांसपेशियों का अवलोकन कीजिए। इस प्रकार अवयवों और मांसपेशियों के शिथिलन के बाद स्थूल शरीर से संबंध-विच्छेद और सूक्ष्म शरीर से दृढ़ संबंध-स्थापन का ध्यान कीजिए।

सूक्ष्म शरीर दो हैं—(१) तैजस, (२) कर्मण।

तैजस शरीर विद्युत् का शरीर है। उसके साथ संबंध स्थापित कर प्रकाश का अनुभव कीजिए। शक्ति और दीप्ति की प्राप्ति का यह प्रबल माध्यम है।

कर्मण शरीर के साथ संबंध स्थापित कर भेद-विज्ञान का अभ्यास कीजिए।

इस भूमिका में ममत्व-विसर्जन हो जाएगा। शरीर मेरा है—यह मानसिक भ्रांति विसर्जित हो जाएगी।

यदि आप खड़ी मुद्रा में कायोत्सर्ग करना चाहते हैं तो सीधे खड़े हो जाइए। दोनों हाथों को घुटनों की ओर लटकाकर उन्हें ढीला छोड़ दीजिए। पैरों को समरेखा में रखिए और दोनों पंजों में चार अंगुल का अंतर रखिए। शेष सारे अंगों को स्थिर रखिए और शिथिल कीजिए। किसी भी अंग में तनाव मत रखिए।

यदि आप सोयी मुद्रा में कायोत्सर्ग करना चाहते हैं तो सीधे लेट जाइए। सिर से लेकर पैर तक के अवयवों को पहले तानिए, फिर क्रमशः उन्हें शिथिल कीजिए। हाथों और पैरों को परस्पर सटाए हुए मत रखिए। श्वास-उच्छ्वास समभाव से किंतु लंबा लीजिए। मन को श्वास-उच्छ्वास में लगाकर एकाग्र या विचारशून्य हो जाइए।

मन को शांत व स्थिर करने के लिए शरीर को शिथिल करना बहुत आवश्यक है। प्रयत्न से चंचलता बढ़ती है। स्थिरता अप्रयत्न से आती है। शरीर उतना शिथिल होना चाहिए जितना किया जा सके। वह प्रतिदिन आधा घंटा शिथिल हो सके तो मन अपने आप शांत होने लगता है। शिथिलीकरण के समय मन पूरा खाली रहे, कोई चिंतन न हो, जप भी न हो। यह न हो सके तो ऊँ, अहम् जैसे किसी शब्द का ऐसा प्रवाह हो कि बीच में कोई दूसरा विकल्प न आए। श्वास की गिनती करने से यह स्थिति सहज ही बन जाती है।

कायोत्सर्ग के प्रारंभ में इन संकल्पों को दोहराइए—

(१) शरीर शिथिल हो रहा है। (२) श्वास शिथिल हो रहा है। (३) स्थूल शरीर का विसर्जन हो रहा है। (४) तैजस शरीर प्रदीप्त हो रहा है। (५) कर्मण शरीर (वासना-शरीर) भिन्न हो रहा है। (६) ममत्व-विसर्जन हो रहा है। (७) मैं आत्मस्थ हो रहा हूँ।

### कायोत्सर्ग का कालमान

कायोत्सर्ग की प्रक्रिया कष्टप्रद नहीं है। उससे शारीरिक विश्रान्ति और मानसिक शांति प्राप्त होती है। इसलिए वह चाहे जितने लंबे समय तक किया जा सकता है। कम से कम पंद्रह-बीच मिनट तो करना ही चाहिए। कायोत्सर्ग में मन को श्वास में लगाया जाता है, इसलिए उसका कालमान श्वास की गिनती से भी किया जा सकता है, जैसे सौ श्वासोच्छ्वास का कायोत्सर्ग, दो सौ, तीन सौ, पाँच सौ, हजार श्वासोच्छ्वास का कायोत्सर्ग आदि-आदि।

### कायोत्सर्ग का फल

कायोत्सर्ग का मुख्य फल है—आत्मा का सान्निध्य प्राप्त करना। उसका गौण फल है—मानसिक संतुलन, बौद्धिक विकास और शारीरिक स्वस्थता। मानसिक स्वस्थता, स्नायु-तनाव व कफ से उत्पन्न रोगों के लिए यह अमूल्य रसायन है।

आचार्य भद्रबाहु ने कायोत्सर्ग के पाँच फल बताए हैं—

(१) दैहिक जड़ता की शुद्धि-श्लेष्म आदि के द्वारा देह में जड़ता आती है। कायोत्सर्ग से श्लेष्म आदि के दोष मिट जाते हैं। अतः उनसे उत्पन्न होने वाली जड़ता भी नष्ट हो जाती है।

- (२) बौद्धिक जड़ता की शुद्धि—कायोत्सर्ग में चित्त एकाग्र होता है। उससे बौद्धिक जड़ता नष्ट हो जाती है।
- (३) सुख-दुःख तितिक्षा—सुख-दुःख सहने की शक्ति प्राप्त होती है।
- (४) शुद्ध भावना का अभ्यास होता है।
- (५) ध्यान की योग्यता प्राप्त होती है।

### बैठकर किए जाने वाले आसन

#### गोदोहिका

विधि—घुटनों को ऊँचा रखकर पंजों के बल पर बैठ जाइए। दोनों हाथों को दोनों ऊरुओं (साथलों) पर टिका दीजिए। यह गाय को दोहने की मुद्रा है, इसलिए इसका नाम गोदोहिका है।

समय—दीर्घकाल।

फल—कामवाहिनी नाड़ियों पर दबाव पड़ने के कारण यह ब्रह्मचर्य में सहायक होता है।

भगवान् महावीर इस आसन में ध्यान किया करते थे।

#### उत्कटुकासन

विधि—दोनों पैरों को भूमि पर टिका दीजिए और दोनों पुतों को भूमि से न छुआते हुए जमीन पर बैठ जाइए।

समय—दीर्घकाल।

फल—(१) ब्रह्मचर्य में सहायक। (२) इसमें बैठे-बैठे पवनमुक्तासन की क्रिया हो जाती है, इसलिए यह वातरोग में भी लाभ पहुँचाता है।

#### समपादपुता

विधि—दोनों पैरों और पुतों को समरेखा में भूमि से सटाकर बैठ जाइए।

समय—दीर्घकाल।

फल—(१) ब्रह्मचर्य में सहायक। (२) वातरोग में लाभकारी।

#### गोनिषदिका

विधि—बाएँ पैर की एड़ी को ऊरु से सटाकर बैठ जाइए और दायें पैर को उससे कुछ नीचे रखकर उसे मोड़ते हुए पीछे की ओर ले जाइए। दूसरी आवृत्ति में दायें पैर की एड़ी को ऊरु से सटाकर बैठ जाइए और बायें पैर को उससे कुछ नीचे रखकर उसे मोड़ते हुए पीछे की ओर ले जाइए। यह गाय के बैठने का आसन है, इसलिए इसे गोनिषदिका कहा जाता है।

समय—दीर्घकाल।

फल—ब्रह्मचर्य में सहायक।

#### हस्तिशुण्डिका

विधि—पुतों के सहारे बैठकर क्रमशः एक-एक पैर को ऊपर उठाकर अधर में रखिए।

समय—एक मिनट से पाँच मिनट तक।

फल—(१) कटिभाग से नीचे के अवयवों में शक्ति का संचार होता है। (२) वीर्य-दोष नष्ट होते हैं।

कुछ योगाचार्य इसे खड़ा होकर किया जाने वाला आसन मानते हैं। उसकी प्रक्रिया यह है।

विधि—सीधे खड़े रहिए। सिर को घुटनों की ओर नीचे ले जाइए। दोनों हाथ जोड़कर हाथी की सूंड की भाँति दोनों पैरों के बीच में जितना ले जा सकें, ले जाएँ।

समय—एक से पाँच मिनट तक।

फल—पेट, पीठ, छाती, ग्रीवा और पैरों के विकार दूर होते हैं।

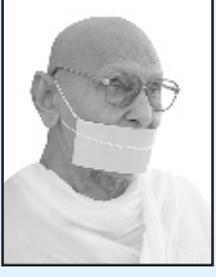
#### पद्मासन

विधि—पहले बायें पैर को दायें ऊरु और जंघा की संधि पर और दायें पैर को बायें ऊरु और जंघा की संधि पर रखिए। फिर दूसरी विधि के अनुसार पहले दायें पैर और फिर बायें पैर उसी पद्धति से रखिए। बायीं हथेली पर दायीं हथेली रखकर उन्हें नाभि के नीचे रखिए। इस स्थिति में बैठने पर पृष्ठ-रज्जु और गर्दन अपने आप सीधे हो जाते हैं। आँखों को मुंदी हुई या अधमुंदी हुई रखिए।

समय—अभ्यास करते-करते इसे तीन घंटे तक ले जाइए। यह उससे भी अधिक समय तक किया जा सकता है किंतु तीन घंटे का अभ्यास कर लेने पर यह सध जाता है।

फल—(१) यह मुख्यतः ध्यानासन है। इससे शारीरिक धातुएँ सम होती हैं, इसलिए यह मन की एकाग्रता में सहायक बनता है। (२) जंघा, ऊरु आदि के स्नायु सशक्त होते हैं। (३) इंद्रिय-विजय में सहायता मिलती है।

(क्रमशः)



## संबोधि

### □ आचार्य महाप्रज्ञ □ बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(४२) यत् सम्यक् तत् भवेन्मौनं, यन्मौनं सम्यगस्ति तत्।  
मुनिः मौनं समादाय, धुनीयाच्च शरीरकम्।।

जो सम्यक्-यथार्थ है, वह मौन-श्रामण्य है और जो मौन है, वह सम्यक् है। मुनि मौन को स्वीकार कर कर्मशरीर को प्रकटित करे, शरीर-मुक्त बने।

मुनि का कर्म मौन है। वह आत्मशुद्धिमूलक होने से सम्यक् है। एक कारण है और दूसरा कार्य। कार्य और कारण के अभेद दर्शन से सम्यक् को मौन और मौन को सम्यक् कहा है। मुनि का कर्म इसलिए सम्यक् है कि उसमें राग, द्वेष, कषाय, मोह आदि का उपशम या क्षय होता है।

मौन धर्म की समुपासना का फल है-स्थूल और सूक्ष्म शरीर से मुक्त होना। सूक्ष्म शरीर का जब अंत हो जाता है, तब भवचक्र रुक जाता है। समस्त सत् और असत् इच्छाओं से सर्वथा आत्मा विलग हो जाती है। इच्छाओं का अंत ही जन्म का अंत है।

‘सत्य मौन में घटित होता है’-यह समस्त ऋषियों का अनुभूत स्वर है और यह भी अनुभूत वाणी है कि सत्यवान् व्यक्ति मौन को उपलब्ध हो जाता है। इस दृष्टि से मौन और सत्य दोनों परस्परश्रित हैं। एक-दूसरे के अभिन्न मित्र हैं। सम्यक् का अर्थ है-सत्य। सत्य यानी अस्तित्व की अनुभूति का ज्ञान। आचार्य पूज्यपाद ने लिखा है-‘साधक बाह्य वचन-व्यवसाय का विसर्जन कर अंतरंग में होने वाले वाक्-प्रपंच का भी विसर्जन करे। परमात्म-प्रदीप को प्रकट करने की यह संक्षिप्त योगविधि है।’ वाक्जाल से मुक्त होना साधक के लिए अत्यंत अपेक्षित है। अन्यथा उसका समग्र शक्ति-प्रवाह व्यर्थ अंतर्वाणी और बाह्यवाणी के व्यापार में व्यय हो जाता है। मौन केवल शारीरिक तनाव की मुक्ति के लिए नहीं है, यह उसका क्षुद्रतम उपयोग है। उसकी वास्तविक उपादेयता है-चैतन्य का साक्षात्कार। जहाँ स्पंदन शांत हो जाते हैं, उस क्षण में हम स्वयं के भीतर होते हैं। मौन उसी चैतन्य की अनुभूति के लिए है। उसके अनेक भेद हैं। अंतर्मौन तक पहुँचने की ये प्राथमिक सीढ़ियाँ हैं। यथार्थ मौन वही है जहाँ साधक की अंतर्वाणी मुखरित हो जाती है और बाह्य सर्वथा शांत। मौन के क्षणों में फिर सत्य-अस्तित्व बोलता है, वह नहीं। उसका अपना ‘मैं’ ‘अहं’ मिट जाता है। वह उसी परम सत्य की एक कड़ी बन जाता है। मौन-साधकों के लिए अंतर्मौन का अभ्यास उपादेय है। अन्यथा जहाँ उन्हें पहुँचना है वहाँ पहुँच पाना असंभव है।

अंतर्मौन का अर्थ है-विचार-नियमन तथा विचार-शून्यता। विचारों के निग्रह के लिए आपको विचारों के प्रति जागरूक या साक्षी होना होगा। जैसे-जैसे जागरण बढ़ेगा। विचारों का सिलसिला टूटता चला जाएगा। एक विचार से दूसरे विचार के उत्पन्न होने के मध्य दूरी का अनुभव होगा और इसी से शैल-शनैः आप शून्य में प्रवेश कर जाएंगे। विचार-नियमन का इससे अधिक सरल और कारगर उपाय नहीं है। यह स्पष्ट है कि विचारों का नियंत्रण दुरूह है, किंतु साधक के आत्म-बल, दृढ़ भावना, श्रद्धा और सतत अभ्यास के सक्षम उसकी दुरूहता स्वयं सरलता में परिणत होती चली जाती है। साधक केवल जो जैसा आता है उसे उसी रूप में शांत-समभाव से देखता रहे, न विचारों को लाने का प्रयास करे और न उन्हें हटाने का। बस, वह तो उनके प्रति जागृत रहे।

(क्रमशः)

## अवबोध

### □ मंत्री मुनि सुमेरुमल ‘लाडनू’ □ धर्म बोध

भाव धर्म

प्रश्न २४ : एक भाव कहाँ होता है?

उत्तर : किसी व्यक्ति विशेष में एक भाव नहीं होता। अजीव में एक पारिणामिक भाव होता है। चौदहवाँ गुणस्थान भी एक पारिणामिक भाव है, किंतु चौदहवें गुणस्थानवर्ती व्यक्ति में अन्य भाव भी होते हैं।

प्रश्न २५ : दो भाव कहाँ होते हैं?

उत्तर : प्रथम तीन चारित्र-भाव दो-क्षायोपशमिक, पारिणामिक उपशम श्रेणी का यथाख्यात चारित्र-भाव दो-औपशमिक, पारिणामिक क्षायिक श्रेणी का यथाख्यात चारित्र-भाव दो-क्षायिक, पारिणामिक

प्रश्न २६ : तीन भाव कहाँ होते हैं?

उत्तर : मिथ्यात्वी व क्षयोपशम सम्यक्त्वी में भाव तीन-औदयिक, क्षायोपशमिक, पारिणामिक।

(क्रमशः)

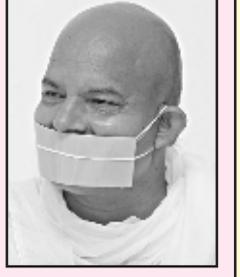
## उपासना

(भाग - एक)

### □ आचार्य महाश्रमण

आचार्य तुलसी

दशार्णभद्र



दशार्णभद्र राजा दशार्णभद्र देश का अधिपति था। यह भगवान् महावीर का परम भक्त था। उसके यह नियम था कि ‘भगवान् महावीर आज अमुक स्थान पर सुखसाता से विराजमान हैं-यह संवाद सुनकर ही भोजन करना।

एक बार भगवान् महावीर ‘दशार्णभद्रपुर’ में पधारे। राजा ने सोचा कि मैं भगवान् के दर्शन करने ऐसे ऐश्वर्य के साथ जाऊँ जैसे ऐश्वर्य से आज तक कोई न गया हो। उसी के अनुरूप साज-सज्जा से राजा दर्शनार्थ गया। अपने वैभव पर मन ही मन इतना रहा था। अवधिज्ञान से सौधर्मेन्द्र ने राजा के भावों का परिज्ञान किया तो वह राजा का मान भंग करने चल पड़ा। इंद्र ने अपनी वैक्रियशक्ति से एक बहुत बड़ा हाथी बनाया, जिसके पाँच सौ मुँह थे। प्रत्येक मुँह में आठ-आठ दंतशूल, प्रत्येक दंतशूल पर आठ-आठ विशाल बावड़ियाँ बनाईं। प्रत्येक बावड़ी में लाख पंखुड़ियों वाला कमल का फूल तथा फूल की प्रत्येक पंखुड़ी पर बत्तीस प्रकार के नाटक हो रहे थे। ऐसे हाथी पर सवार होकर इंद्र महाराज प्रभु के दर्शनार्थ आए।

जब इंद्र राजा दशार्णभद्र के सामने से जाने लगा तो राजा ने सोचा-इसके सामने तो मेरी ऋद्धि कुछ भी नहीं है।

अपने से अधिक को देखकर व्यक्ति को अपनी सही स्थिति का ज्ञान हो जाता है। हंत! हंत! मैं व्यर्थ ही इतराया। अब मैं अपने मान की रक्षा कैसे करूँ? सोचा, हो न हो, यह सब देव माया है। उसे परास्त करने और अपना स्वत्व सुरक्षित रखने के लिए प्रभु के पास आकर मुनि बन गया।

यह सामर्थ्य शक्रेन्द्र में कहाँ? उन्होंने अपनी पराजय स्वीकार की। दशार्णभद्र के पैरों में पड़कर इस अद्भुत त्याग की मुक्तकंठ से स्तवना करते हुए क्षमायाचना की। दशार्णभद्र मुनि अपने उत्कट तप के द्वारा केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष में पधारे।

## श्रमणोपासक आनंद

भगवान् महावीर के प्रमुख श्रावक का नाम ‘आनंद’ था। उसने भगवान् महावीर से श्रावक के बारह व्रत ग्रहण किए। उसकी प्रेरणा से उसकी धर्मपत्नी शिवानंदा ने भी श्राविका व्रत ग्रहण किए।

वह ‘वाणिज्य’ ग्राम के निकट ‘क्रीलाक सन्निवेश’ में रहने वाला ‘पटेल’ जाति का था, पर था समुद्र। उसकी समृद्धि इससे ही आँकी जा सकती है कि उसके पास बारह करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ तथा चालीस हजार गाएँ थीं।

अपने व्रतों का सानंद और सकुशल पालन करते-करते उसने आमरण अनशन किया। अनशन में उसे भावों की विशुद्धता से विपुल अवधिज्ञान प्राप्त हुआ।

उन्हीं दिनों भगवान् महावीर भी वहाँ पधारे। गौतम स्वामी पारणे के लिए गाँव में आए। जब उन्होंने आनंद श्रावक के अवधिज्ञान की चर्चा सुनी तो उसके यहाँ पधारे। आनंद ने वंदना करके पूछा-‘भगवन्! क्या अनशन में गृहस्थ को अवधिज्ञान उत्पन्न हो सकता है?’

‘हाँ, हो सकता है।’ गौतम गणधर ने बताया।

आनंद ने कहा-‘भगवन्! मुझे भी अवधिज्ञान हुआ है। मैंने पूर्व, पश्चिम और दक्षिण में पाँच सौ योजन लवण समुद्र के अंदर तक, उत्तर में चूल हिमवन्त पर्वत तक तथा ऊपर सौधर्म स्वर्ग और नीचे प्रथम नरक के लौलुच्य नामक नरकवास को जाना-देखा है।’

गौतम सुनकर चौंके और बोले-‘गृहस्थ को इतना विपुल अवधिज्ञान नहीं हो सकता है। तुम्हारा यह मिथ्याभाषण हुआ है। इसलिए इसकी आलोचना करो।’

आनंद ने विनम्र स्वर में पूछा-‘प्रायश्चित्त सत्य का होता है या मिथ्या का?’

‘असत्य का।’

‘तब तो भगवन् आप ही ऐसा करिये।’

आनंद की दृढ़तापूर्वक बात सुनकर गौतम महावीर के पास आए। सारी बात कही। महावीर ने कहा-‘हाँ, उसे उतना ही अवधिज्ञान हुआ है। तुम्हारे द्वारा ही असत्य भाषण हुआ है। अतः आनंद से क्षमा-याचना करो।’

गौतम तुरंत आनंद के पास आए और उसे सत्य बताते हुए कहा-‘मैं वृथा विवाद के लिए तुमसे क्षमा-याचना चाहता हूँ।’

आनंद से सविनय क्षमा-याचना करके गौतम ने अपनी महानता का परिचय दिया। यों आनंद श्रावक ने बीस वर्ष तक श्रावक-व्रतों का पालन किया। अंत में एक महीने का समाधिपूर्वक अनशन करके प्रथम स्वर्ग में पैदा हुआ। वहाँ से महाविदेह क्षेत्र में जाकर मोक्ष में जाएगा।

(क्रमशः)



## प्रथम बार नौ साध्वियों का मिलन समारोह

**नासिक।**

साध्वी मधुस्मिता जी औरंगाबाद से मुंबई की ओर विहार कर रही हैं एवं डॉ० साध्वी पीयूषप्रभा जी कानपुर से मुंबई की ओर विहार कर रही हैं। भगवान राम की तपोभूमि नासिक पर दो सिंघाड़ों का आध्यात्मिक मिलन हुआ। नासिक के तेरापंथ समाज के इतिहास में प्रथम बार ऐसा मिलन हुआ है। डॉ० साध्वी पीयूषप्रभा जी, सहवर्ती साध्वीवृंद के साथ साध्वी मधुस्मिता जी की अगवानी में कुछ दूर पधारे एवं गीत का संगान किया।

मिलन के इस दृश्य को देखकर नासिक श्रावक समाज भाव-विभोर हो गया। तेरापंथ सभा भवन में आयोजित आध्यात्मिक मिलन समारोह में साध्वीश्रीजी ने नमस्कार महामंत्र से शुभारंभ किया। नासिक तेरापंथी सभाध्यक्ष शांतिलाल दुगड़ ने स्वागत वक्तव्य दिया। आगतुक साध्वी मधुस्मिता जी का

स्वागत करते हुए साध्वी पीयूषप्रभा जी ने कहा कि आज का यह मंगलमय अवसर हार्दिक प्रसन्नता लिए उपस्थित हुआ है। इस अवसर को देखने के लिए श्रावक समाज लालायित रहता है।

नासिक के श्रावक समाज का यह सौभाग्य है कि यह पुनीत अवसर देखने को मिला। पाँचों ही साध्वियों की विशेषताओं का गुणगान करते हुए साध्वी पीयूषप्रभा जी के साथ साध्वी भावनाश्री जी, साध्वी सुधाकुमारी जी, साध्वी दीप्तिशशा जी ने गीत का संगान किया। साध्वी भावनाश्री जी ने भी अपनी प्रसन्नता व्यक्त की।

साध्वी मधुस्मिता जी ने इस आध्यात्मिक मिलन समारोह में कहा कि आज का मिलन विकास का प्रतीक है, प्रकाश का प्रतीक है और उल्लास का प्रतीक है। तेरापंथ धर्मसंघ में साधु-साध्वियों में एकता का भाव अनूठा है। मिलन का यह

मनभावन दृश्य एकता की भावना पुष्ट कर रहा है। श्रावक-श्राविकाओं को भी एक अपूर्व अवसर प्राप्त हुआ है, कर्मों की निर्जरा करने का। वर्षों बाद मिले साध्वीवृंद को देखकर मन आह्लादित है, प्रफुल्लित है।

साध्वी स्वस्थप्रभा जी ने अपने विचार व संस्मरण प्रस्तुत किए। साध्वी आत्यशशा जी, साध्वी सहजयशा जी, साध्वी मल्लिप्रभा जी ने गीत प्रस्तुत किया। महिला मंडल से संजना भंडारी, नेहा समदरिया, चंद्रप्रभा चोपड़ा, ठाणे से समागत उपासिका प्रतिभा चोपड़ा ने वक्तव्य व गीत प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए साध्वी दीप्तिशशा जी ने आगतुक साध्वीश्री से अपनी कर्मभूमि मुंबई में शीघ्र पधारने का निवेदन किया। कार्यक्रम में डांबिवली से डॉ० दिलीप मुणोत, ठाणे से सुभाष हिरण आदि श्रद्धालु श्रावकजन उपस्थित थे।

## अणुव्रत अमृत रैली का आयोजन

**गुवाहाटी।**

समणी निर्देशिका विपुलप्रज्ञा जी एवं समणी आदर्शप्रज्ञा जी के सान्निध्य में अणुव्रत के ७५वें वर्ष के शुभारंभ पर अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा निर्देशित अणुव्रत 'अमृत रैली' का आयोजन अणुव्रत समिति, गुवाहाटी द्वारा किया गया। इस अवसर पर उपस्थित मुख्य अतिथि गुवाहाटी पौर निगम के मेयर मृगेन सरनिया, स्थानीय पार्षद प्रमोद स्वामी व सौरभ झुनझुनवाला, अणुविभा के संगठन मंत्री (पूर्वांचल), बजरंग बैद, अणुविभा असम प्रभारी छत्तर सिंह चोरडिया, सभा उपाध्यक्ष बाबूलाल सुराणा, तेयुप अध्यक्ष मनीष सिंधी, तेमम अध्यक्ष मंजु भंसाली, टीपीएफ अध्यक्ष सीए संतोष पुगलिया, जीतो के अध्यक्ष सुनील कठोटिया आदि उपस्थित थे। रैली का शुभारंभ समणीवृंद के मंगलपाठ व अतिथियों के सम्मान व ध्वजारोहण से हुआ।

सभा की शुरुआत अणुव्रत गीत एवं अणुव्रत समिति अध्यक्ष बजरंग लाल डोसी द्वारा अणुव्रत आचार संहिता के वाचन से हुआ। अध्यक्ष ने सभा का स्वागत-अभिनंदन किया। समणी निर्देशिका विपुलप्रज्ञा जी ने अणुव्रत आंदोलन की जानकारी दी। समणी आदर्शप्रज्ञा जी ने कहा कि अणुव्रत को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन संयोजक निर्मल सामसुखा व धन्यवाद ज्ञापन मंत्री अशोक बोरड़ ने किया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में सहमंत्री जयकुमार भंसाली व सुरेश मालू, प्रचार-प्रसार मंत्री संतोष काबरा, संगठन मंत्री प्रेमलता बैद, कार्यकारिणी सदस्य संपत मिश्रा, निर्मल बैद, तेरापंथी सभा, महिला मंडल, तेयुप, टीपीएफ, अहम भजन मंडली, शांतिपुर भजन मंडली के साथ अन्य कई संस्थाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

## शासनमाता की पुण्यतिथि पर आस्था का अर्घ्य

**कुर्ला (मुंबई)।**

साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की पुण्यतिथि श्रद्धा के साथ मनाई गई। साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि आज हम उस विलक्षण व्यक्तित्व की अर्चना कर रहे हैं, जिन्होंने अर्धसदी तक संघ को मुक्त हाथों से बाँटा है। पा०शि० संस्था से अब तक मैं उनकी छत्रछाया में पलती रही। उनका मार्गदर्शन मेरे लिए मील का पत्थर बन गया। शासनमाता ने मुझे विकास के

इतने अवसर दिए जो मेरे जीवन की थाती हैं।

प्रबुद्ध साध्वी डॉक्टर योगक्षेमप्रभा जी ने कहा कि साध्वीप्रमुखाश्री की ममता, समता व क्षमता निराली थी। वे सरसता, समरसता व सहनशीलता की त्रिवेणी थी। उनके साथ मैं बीते पल जीवन की अनमोल धरोहर हैं।

साध्वी लावण्यप्रभा जी ने मुक्तकों के माध्यम से अपनी श्रद्धा समर्पित की।

साध्वीश्री जी के साथ ही साध्वी

कुंदनयशा जी, साध्वी मुदितप्रभा जी एवं साध्वी मधुरप्रभा जी ने गीत से वातावरण को भक्तिमय बना दिया। वरिष्ठ कार्यकर्ता राजकुमार चपलोट ने भाव व्यक्त किए।

तेरापंथी महासभा से महाराष्ट्र प्रभारी दिनेश सुतरिया, अभातेमम से प्रेमलता सिसोदिया, कुर्ला तेरापंथ समाज से डॉक्टर संमत सिसोदिया, जूना कुर्ला से उपासिका चंदा वड़ाला ने अपने उद्गार व्यक्त किए। मंगलाचरण तेमम की बहनों ने किया।

## नववर्ष पर जीवन में संकल्पों के सूरज उगाएँ

**फरीदाबाद।**

साध्वी अणिमाश्री जी ने तेरापंथ भवन में हिंदू नववर्ष पर विशिष्ट मंत्रों एवं प्रभावशाली जैन श्लोकों के साथ वृहद मंगलपाठ प्रदान किया। पहली बार इस प्रकार का साध्वीश्री जी के मुखारविंद से मंगलपाठ श्रवण कर श्रद्धालुजनों ने नई ऊर्जा का अनुभव किया।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि आज का यह मंगल प्रभात संकल्पों के श्रीगणेश का उत्सव है। हम अपने जीवन में संकल्पों का सूरज उगाएँ। सपने कभी पूरे नहीं होते, संकल्प पूरे होते हैं। संकल्प करें, मैं समय का दुरुपयोग नहीं करूँगा। पुरुषार्थ करके अपनी किस्मत को और अधिक तेजोदीप करूँगा। अपने जीवन को समता की विशेष साधना के द्वारा प्राणवान व तेजस्वी बनाने का संकल्प करें। इन तीन संकल्पों को आत्मसात करने वाला व्यक्ति शारीरिक, मानसिक व आत्मिक उल्लास को प्राप्त कर सकता है।

डॉ० साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा कि नववर्ष पर विशेष संकल्प करें—मैं अनी आत्मा का अहित नहीं करूँगा। आत्महित व परिचय का कार्य करूँगा। साध्वी अणिमाश्री जी आत्महित व परहित का पैगाम लेकर दिल्ली आई हैं। साध्वी कर्णिकाश्री जी ने मंच संचालन करते हुए मंत्रों के प्रभाव की चर्चा की। साध्वीवृंद के सामूहिक तीर्थकर स्तुति संगान के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

दिल्ली सभाध्यक्ष सुखराज सेठिया, शाहदरा सभाध्यक्ष पन्नालाल बैद, फरीदाबाद सभाध्यक्ष गुलाब जैन ने अपने भावों की सटीक प्रस्तुति दी। सभामंत्री संजीवनी जैन ने अतिथियों का परिचय दिया एवं सभा द्वारा समागत महानुभावों का सम्मान किया गया।

## प्रथम पुण्यतिथि पर गुणानुवाद कार्यक्रम

**उत्तरपाड़ा (कोलकाता)।**

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की प्रथम वार्षिक पुण्यतिथि का कार्यक्रम मनाया गया। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी तेरापंथ धर्मसंघ की आठवीं साध्वीप्रमुखा थीं। तीन-तीन आचार्यों की सेवा करने का उन्हें सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने उनकी विशेषताओं का अंकन करते हुए असाधारण साध्वीप्रमुखा व शासनमाता के रूप में स्वीकार किया। साध्वीप्रमुखा के पचास वर्ष पूर्ण होने पर आचार्यश्री महाश्रमण जी सन्निधि में अमृत महोत्सव मनाया गया। मुनिश्री ने आगे कहा कि साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी नैसर्गिक प्रतिभा की धनी थी।

मुनि परमानंद जी ने कहा कि साध्वीप्रमुखाश्री का जीवन समर्पण से भरा हुआ था। वे वात्सल्य की देवी थी। मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत प्रस्तुत किया। प्रकाश गिड़िया, जुगराज बैद, तेमम की मंत्री सुमन सिंधी ने अपने विचार रखे। संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

## भगवान ऋषभ दीक्षा कल्याणक दिवस

**हिंदमोटर।**

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में भगवान ऋषभ दीक्षा कल्याणक समारोह पारस भवन में मनाया गया। मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जैन धर्म आध्यात्मिक व वैज्ञानिक धर्म है। इस धर्म के प्रवर्तक तीर्थंकर होते हैं। इस युग के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभ हुए। भगवान ऋषभ से पूर्व कुलकर, समाज की व्यवस्था संभालते हैं। समाज में विकट समस्याएँ आने लगीं, तब लोगों ने कुलकर नाभि से समाधान माँगा तब नाभि ने राजकुमार ऋषभ को राजा बनाया। ऋषभ ने लोगों को असि, मसि, कृषि का ज्ञान दिया।

ऋषभ इस युग के प्रथम कर्म प्रणेता हुए। बाद में धर्म युग के प्रणेता हुए। आज के दिन भगवान ऋषभ ने चार हजार साधियों के साथ दीक्षा ली। दीक्षा अनंत की यात्रा है। दीक्षा का अर्थ है—जागना। मुनिश्री ने आगे कहा कि जिनके अंतराय कर्म हल्के होते हैं वे ही तपस्या कर सकते हैं। बहन सुनिता बैद ने वर्षीतप प्रारंभ किया। मुनि परमानंद जी ने कहा कि भगवान ऋषभ ने तपस्या दीक्षा के साथ ही प्रारंभ कर तप का संदेश दिया। मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत प्रस्तुत किया। मुनि जिनेश कुमार जी ने जप अनुष्ठान कराया।

## टर्निंग पॉइंट सेमिनार का आयोजन

**पालघर।**

मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में किशोर और कन्याओं के लिए टर्निंग पॉइंट सेमिनार का सभा भवन में आयोजन किया गया। मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि स्वयं बनें स्वयं के निर्माता। आप जीवन के इस मोड़ पर खड़े हैं, जहाँ से आप उत्थान के मार्ग पर बढ़ सकते हैं और पतन की ओर भी जा सकते हैं। क्या चाहेंगे आप? जीवन का विकास या जिंदगी का अभिषाप। सबसे पहले हमें अपने लक्ष्य का निर्धारण करना होगा। तभी यह जीवन सफल-सुफल बन सकता है।

विकास का मार्ग उच्च शिखरों को हासिल कर सकता है। आवश्यकता है दृढ़-संकल्प शक्ति की, निरंतर सकारात्मक विचारों की। सफलता आपके पैर छुएगी। नकारात्मक चिंतन, विचारों से विकास का मार्ग अवरुद्ध हो सकता है।

मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि सेवा, संस्कार, संगठन को मजबूत करने का जीव का लक्ष्य बनाएँ। कार्यक्रम में उपस्थिति सराहनीय रही।

## होली महोत्सव एवं हास्य कवि सम्मेलन

### जयपुर।

तेयुप के द्वारा रामबाग सर्किल स्थित सुबोध स्कूल में वार्षिक होली महोत्सव का आयोजन हुआ। इस महोत्सव के कार्निवल में विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक, पारिवारिक, मनोरंजक आयोजन में राजस्थानी संस्कृति के विविध रंग खिले।

परिषद् के अध्यक्ष सुरेंद्र नाहटा ने आगंतुकों का स्वागत करते हुए कहा कि होली का त्योहार समाज को एकता के सूत्र में बाँध रहा है। कार्यक्रम के प्रायोजक दीपक वैद ने अपने विचार व्यक्त किए। अध्यक्ष सुरेंद्र के साथ समाज के विशिष्ट महानुभावों का प्रतीक चिह्न भेंट कर स्वागत किया।

कार्यक्रम के संयोजक हितेश भांडिया ने बताया कि पूरे शहर के नामचीन व्यक्तियों ने कार्यक्रम के लिए सजाए गए कार्निवल में ग्रामीण विलुप्त होते हुए खेल-कूद, कुम्हारों

के द्वारा बर्तन कैसे बनाए जाते हैं, लाख की चूड़ियों, कठपुतलियों, पेंटिंग, मेहँदी, नेल आर्ट, डार्ट गेम, बैलून शूटिंग आदि कार्यक्रमों का लुप्त उठाया।

इस अवसर पर शेखावटी से आए ५० से अधिक कलाकारों ने विलुप्त होते हुए पारंपरिक लोकगीतों को गाते हुए जब ढप-चंग की थाप पर अपनी नृत्य प्रस्तुति दी तो मानो पूरा वातावरण होली के माहौल में ढल गया।

नवलगढ़ से पधारे हुए सुप्रसिद्ध हास्य कवि हरीश हिंदुस्तानी ने कार्यक्रम का संचालन किया। दिल्ली से आई शृंगार रस की रिमझिम हास्य पैरोडी ममता शर्मा ने काव्य का सतरंगी पाठ करते हुए कहा कि राम के देश को निर्भीक बनाने के लिए यानी भारत में रामराज को लाने के लिए, रावणों से हमें यह देश बचाना होगा, अब तो हाथों

में धनुष-बाण उठाना होगा।

ठहाका सम्राट सुरेंद्र यादवेंद्र, मुंबई से पधारे वीर रस के कवि पार्थ नवीन ने समा बांध दिया। कार्यक्रम में सांगानेर विधायक अशोक लाहोटी, राजस्थान समाज कल्याण बोर्ड से अर्चना शर्मा, पूर्व महापौर ज्योति खंडेलवाल, राजस्थान से पूर्व बीजेपी उपाध्यक्ष सुनील कोठारी, जयपुर नगर निगम ग्रेटर के उपमहापौर पुनीत कर्णावट सहित बड़े स्तर पर राजनीतिक, प्रशासनिक महानुभावों के साथ महिलाएँ, पुरुष, बच्चे पधारे।

आभार ज्ञापित करते हुए मंत्री अविनाश छाजेड़ ने बताया कि कार्यक्रम की संयोजना में तेयुप, जयपुर की टीम का श्रम बहुत उल्लेखनीय रहा। परिषद् परिवार की ओर से कविगण व कार्यक्रम के प्रायोजकों को मोमेंटो प्रदान किया गया।

## मारवाड़ स्तरीय आंचलिक क्षितिज कार्यशाला का आयोजन

### बालोतरा।

शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथभवन में तेममं द्वारा निर्देशित मारवाड़ आंचलिक स्तरीय क्षितिज कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया की अध्यक्षता में आयोजित हुई। इस अवसर पर मारवाड़ के लगभग 93 क्षेत्रों से महिलाओं एवं कन्याओं की उपस्थिति रही।

मंत्री संगीता बोधरा ने बताया कि नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। महिला मंडल द्वारा अतिथियों का स्वागत किया गया। मंगलाचरण एवं स्वागत गीतिका की प्रस्तुति महिला मंडल द्वारा की गई। महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला देवी संकलेचा ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया।

राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया ने कहा कि जहाँ ऊँचाइयों व गहराइयों का आपस

में मिलन होता है उसे क्षितिज कहते हैं। महिलाएँ भी अपने भीतर छिपी असीम ऊर्जा को विकसित करें। शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी ने अभातेममं के समस्त कार्यक्रमों के लिए उन्हें शुभकामनाएँ दी।

इस अवसर पर साध्वी यशस्वीप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त किए। महामंत्री मधु देराश्री ने अपने भाव व्यक्त किए। इस अवसर पर राष्ट्रीय उपाध्यक्षा सरिता डागा, राष्ट्रीय कन्या मंडल प्रभारी अर्चना भंडारी, राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य माला कातरेला, सरिता बागरेचा एवं विनीता बैंगानी की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नगर परिषद सभापति सुमित्रा वेद मेहता, सभा अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के संदेश का वाचन सारिका बागरेचा ने

किया।

कल, आज और कल, ग्रुप डिस्कशन राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया द्वारा करवाया गया। जिस पर प्रश्नोत्तर के माध्यम से बहनों के द्वारा चर्चा-परिचर्चा की गई। स्थानीय तेममं, बालोतरा की बहनों द्वारा रोचक प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम में विशेष सहयोग मीना ओस्तवाल एवं रुचिका तातेड़ और महिला मंडल की सदस्यों का रहा। आरवि श्रीश्रीमाल ने रोचक प्रस्तुति दी।

तेममं, बालोतरा द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्षा एवं राष्ट्रीय महामंत्री को अभिनंदन पत्र से सम्मानित किया गया। अभातेममं द्वारा भी तेममं को मोमेंटो के माध्यम से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल मंत्री संगीता बोधरा एवं उपाध्यक्षा रानी बाफना ने किया।

## वृहद दंपति कार्यशाला का आयोजन

### फरीदाबाद।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा के तत्वावधान में जैन स्थानक में 'वृहद दंपति कार्यशाला' का आयोजन किया गया। जिसमें तेरापंथी जैन व जैनेत्तर समाज के सैकड़ों भाई-बहनों ने उत्साह के साथ भाग लिया। 'हैप्पी कपल खुशियाँ डबल' कार्यक्रम ने सबकी खुशियों को शतगुणित कर दिया।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि परिवार रूपी इमारत के दो मजबूत पिलर हैं—पति और पत्नी। जिनके सक्षम कंधों पर परिवार रूपी भव्य महल खड़ा हुआ है। परिवार रूपी रथ के दो कुशल सारथी हैं—पति व पत्नी। जो परिवार की गाड़ी को सम्यक् ढंग से संचालित कर रहे हैं। पति-पत्नी परिवार की रौनक होते हैं, परिवार की शान, जान और सम्मान होते हैं। परिवार की खुशहाली तभी कायम रह सकती है जब पति-पत्नी दोनों खुश हों। पति-पत्नी के संबंधों में जितनी मधुरता, समरसता व प्रेम का निर्रर बहेगा उतना ही परिवार खुश व आनंदित रहेगा।

हैप्पी कपल के टिप्स देते हुए साध्वीश्री जी ने कहा कि दोनों के बीच अंडरस्टैंडिंग अच्छी होनी चाहिए। परिवार के बड़े-बुजुर्गों के प्रति सम्मान के भाव रहने चाहिए। छोटों के प्रति वात्सल्य के भाव रहने चाहिए। एक-दूसरे के प्रति सम्मान का भाव रहना चाहिए। एक दूसरे को सुनने का अभ्यास करें।

डॉ० साध्वी सुधाप्रभा जी ने 'फाइव सी' की चर्चा करते हुए कहा कि डॉट क्रिटिसाइज ईच अदर, डॉट कंपेयर विथ अदर्स, बी केयरफूल फॉर पार्टनर, कॉप्रोमाइस एंड कम्युनिकेशन। ये पाँच सी पति-पत्नी के संबंधों में मधुरता एवं प्रसन्नता ला सकते हैं।

साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने मंच का संचालन करते हुए ट्रस्ट, टॉक, टाइम एंड टच—यह फोर टी का फोर्मूला रिश्तों में प्रसन्नता की मिठास भर सकता है। साध्वी समत्वयशा जी ने सुमधुर गीत का संगान किया।

सभाध्यक्ष गुलाबचंद बैद, जैन स्थानक के मंत्री अंकित जैन ने अपने विचार व्यक्त किए। रायचंद राखेचा ने अपनी बहनों के स्वागत में अनेकों संकल्प स्वीकार कर संबंधों की भेंट चढ़ाई एवं अपने मनोभावों की अभिव्यक्ति दी।

## ज्ञानार्थियों के लिए प्रतियोगिता का आयोजन

### गंगाशहर (बीकानेर)।

मुनि श्रेयांस कुमार जी, मुनि विमल विहारी जी और मुनि प्रबोध कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में ज्ञानशाला संचालित की गई। जिसमें लगभग 200 से अधिक ज्ञानार्थियों ने भाग लिया। मुनि श्रेयांस कुमार जी के सान्निध्य में शासनमाता असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की प्रथम पुण्यतिथि पर गुरुदेव द्वारा प्रदत्त मंत्र का जप ज्ञानशाला द्वारा किया गया।

मुनिश्री ने कहा कि साध्वीश्री जी का तेरापंथ धर्मसंघ की आठवीं साध्वीप्रमुखा के रूप में चयन भी गंगाशहर तेरापंथ भवन के प्रांगण में आचार्यश्री तुलसी द्वारा किया गया था।

ज्ञानशाला सह-प्रभारी चैतन्य रांका ने बताया कि बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु ज्ञानशाला, गंगाशहर द्वारा विशेष प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चों ने उत्साह से भाग लिया। इस प्रतियोगिता में दो ग्रुप बनाए गए—प्रथम ग्रुप के विजेता—प्रज्ञा सेठिया, लक्षिता डागा, रंगस बोधरा रहे। द्वितीय ग्रुप के विजेता—रचिता छलाणी, दीक्षा सेठिया एवं छवि सुराणा रहे।

तेयुप कार्यकारिणी सदस्य एवं ज्ञानशाला प्रभारी सी०ए० मोहित संचेती, सह-प्रभारी चैतन्य रांका, देवेन्द्र डागा, ज्ञानशाला संयोजिका संजु लालाणी, प्रशिक्षिका मोहिनी देवी चोपड़ा, सुनीता डोसी सहित अनेकजनों ने इसमें सहयोग किया।

## रंगारंग कार्यक्रम 'रंगीलो फागन' का आयोजन

### साउथ हावड़ा।

तेरापंथी सभा के द्वारा होली का रंगारंग कार्यक्रम 'रंगीलो फागन मिल्स' क्लब हाउस में आयोजित किया गया। राजस्थान के सुप्रसिद्ध कलाकार कुलदीप ओझा, सोनू तंवर, आशा सपेरा, टिंकल वैष्णव एवं कल्पित चौधरी ने अपनी प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम की शुरुआत साउथ हावड़ा कन्या मंडल द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुई। युवती मंडल एवं महिला मंडल की बहनों ने प्रस्तुतियाँ दी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता संजय नाहटा ने की। मुख्य अतिथि कमला देवी सेठिया, उद्घाटनकर्ता प्रकाश पारख, विशिष्ट अतिथि अमरचंद दुगड़, जितेंद्र कुंडलिया, नवीन बैगाणी सहित अन्य सभाओं के पदाधिकारीगण ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। सभा अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफना ने आगंतुक अतिथियों का स्वागत किया।

कार्यक्रम का लाइव प्रसारण फेसबुक के माध्यम से मीडिया प्रभारी मनोज बोहरा ने किया। आर्थिक अनुदानदाताओं, शुभचिंतकों, प्रवासी साउथ हावड़ावासियों एवं कार्यकर्ताओं के प्रति आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री बसंत पटावरी ने किया।

## शासनमाता की पुण्यतिथि पर आयोजन

### राजलदेसर।

शासनश्री साध्वी मानकुमारी जी के सान्निध्य में शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की प्रथम वार्षिक पुण्यतिथि का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र के मंत्रोच्चार से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

साध्वी मानकुमारी जी ने कहा कि आज उनके महाप्रयाण को एक वर्ष हो गया। उन्होंने तीन-तीन आचार्यों के साथ मिलकर धर्मसंघ की लंबे समय तक सेवा की। उनके जीवन में अनेक विशेषताओं का समन्वय था। विनम्रता, ऋजुता, मृदुता, दृढ़ता, प्रवचन शैली, वक्तव्य शैली आदि—महासती के गुणों को शब्दों का परिधान पहनाना सूर्य को दीपक दिखाना मात्र होगा।

इस अवसर पर साध्वी कीर्तिरेखा जी, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष विमल सिंह दुधेड़िया एवं महिला मंडल की अध्यक्षा प्रेम देवी विनायकिया ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वीवृंद ने सामूहिक रूप से तथा तेरापंथ महिला मंडल की सदस्यों ने गीतिका का संगान किया। संचालन साध्वी इंदुरेखा जी ने किया।

## होली कार्यक्रम ज्ञानशाला के संग

### गोरेगाँव (मुंबई)।

माणकगणी जोन ज्ञानशाला के विद्यार्थियों का एसएसबी के परीक्षा रिजल्ट, अनुएल डे एवं होली का कार्यक्रम आयोजित किया गया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। मुंबई आंचलिक संयोजिका अनीता परमार, सह-संयोजिका राजश्री कच्छरा, शीतल सांखला, गोरेगाँव सभा अध्यक्ष चतरलाल सिंधवी, सभा मंत्री रमेश राठौड़, ज्ञानशाला प्रभारी संपत सांखला आदि अनेक जन उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का संचालन जोन सह-संयोजिका भावना सांखला ने किया। स्वागत भाषण मंजु सिंधवी ने किया। आभार ज्ञापन अलका ने किया। वेस्ट, अनुशासित एवं एक्टिव ज्ञानार्थियों और जिन बच्चों की फूल एटेंडेंस है उन सभी बच्चों को क्षेत्र लेवल पर सम्मानित किया गया।



## आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस के आयोजन

### घाटकोपर

साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में घाटकोपर में राम नवमी एवं भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस मनाया गया। भारतीय संस्कृति में हजारों वर्ष बाद आलोक भरता रहता है श्रीराम के प्रति जनता की अगाध आस्था है। यह उद्गार साध्वी निर्वाणश्री जी ने व्यक्त किए।

साध्वीश्री जी ने आचार्य भिक्षु के अभिनिष्क्रमण की अत्यंत रोचक शैली में प्रस्तुति दी। उन्होंने कहा कि तत्त्व की सही समझ अपेक्षित है, जिस अध्यात्म की राह हमें भिक्षु ने दिखाई है उस पर चलने का संकल्प करें।

साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु ने धर्मक्रांति का बिगुल बजाया, क्योंकि उनके लिए आगम और जिनवाणी सर्वोपरि थे। गुरु के नेह को छोड़ उन्होंने सत्य की डगर पकड़ी, उनकी समग्र साधना आचार और विचार शुद्धि की साधना थी। मंगलाचरण रंजना बाफना ने किया। अभातेममं की पूर्व अध्यक्षा कुमुद कच्छारा ने दोनों मर्यादा पुरुषोत्तम के प्रति आस्था की अभिव्यक्ति दी।

साध्वी लावण्यप्रभा जी ने सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी। तेयुप के पूर्व अध्यक्ष लोकेश डांगी ने मंच संचालन करते हुए अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त किए। कार्यक्रम में घाटकोपर सभा अध्यक्ष शांतिलाल बाफना, ख्यालीलाल तातेड़, अर्जुनलाल सोलंकी, संपत चोरड़िया, सुरेश राठौड़, चांदमल सोलंकी, ख्यालीलाल बड़ाला, हरकलाल बाफना, निर्मल कुमठ, श्रवण चोरड़िया, राकेश बड़ाला, महिला मंडल संयोजिका मंजु कुमठ, कांता तातेड़ आदि गणमान्यजन उपस्थित थे।

### श्यामनगर, जयपुर

शासनगौरव बहुश्रुत परिषद की सदस्या साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, जयपुर के तत्त्वावधान में २६४वें भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस भिक्षु साधना केंद्र समिति में आयोजित हुआ। साध्वीवृंद द्वारा मंगल संगान से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी ने कहा कि आचार्यश्री भिक्षु धर्मक्रांति के सूत्रधार थे। उन्होंने रूढ़िवादी विचारधारा में जकड़े धार्मिक जगत को एक नया मोड़ दिया। धर्म को धर्मस्थानों से बाहर निकालकर उसे जीवनगत बनाने के सूत्र दिए। श्रद्धा और आचार से संबंधित आचार्य भिक्षु की नई स्थापनाओं की चर्चा करते हुए साध्वीश्री जी ने कहा कि संघर्षों तक विरोधों के आँधी-तूफानों को चीरते हुए

भिक्षु अपनी मंजिल की ओर अवरिचल बढ़ते रहे। आचार्य भिक्षु ने २६४ वर्ष पूर्व जो आलोक कण बिखेरे थे, वे आज भी धार्मिक, सामाजिक जगत का पथ दर्शन कर रहे हैं।

साध्वी मधुलता जी ने कहा कि आचार्यश्री भिक्षु का अभिनिष्क्रमण सत्य का अभिनिष्क्रमण है। आपकी महानता का बीज मंत्र था—अप्रकंप सत्यनिष्ठा।

साध्वी कनकश्री जी द्वारा रचित गीत का सुमधुर संगान साध्वी मधुलता जी आदि साध्वियों ने किया। साध्वी समितिप्रभा जी ने शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी द्वारा रचित कविता प्रस्तुत कर अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। सी-स्कीम महिला मंडल की अध्यक्षा नीरू पुगलिया ने अपने भाव व्यक्त किए। मंच का संचालन साध्वी संस्कृतिप्रभा जी ने किया।

### फरीदाबाद

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में भिक्षु अभिनिष्क्रमण का कार्यक्रम भक्तों की उपस्थिति में मनाया गया।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि रामनवमी के दिन तेरापंथ के राम ने आत्माराम की शुद्धि साधना के लिए अपने कदमों को गतिशील किया। उनका अभिनिष्क्रमण तेरापंथ की आधारभूति बन गया। उन्होंने नए पथ के श्रीगणेश के लिए अभिनिष्क्रमण नहीं किया था। उन्होंने आचार्य पद प्राप्ति के लिए अभिनिष्क्रमण नहीं किया था, उनके भीतर महत्त्वाकांक्षा नहीं थी, पदलिप्सा नहीं थी, वे तो भगवान महावीर के परम भक्त थे। उन्होंने तो महावीर बनने के लिए अभिनिष्क्रमण किया था। सत्य प्राप्ति के लिए, शुद्ध साधाचार के लिए अभिनिष्क्रमण किया था। उनका अभिनिष्क्रमण तेरापंथ का शुभ भविष्य बन गया।

साध्वीश्री जी ने कहा कि आज ही के दिन उनके जीव में कष्टों की कहानी का प्रारंभ हुआ। उनके मार्ग में विरोधों के भूचाल आए, आंधियाँ आईं, तूफान आए पर वह वीर पुरुष भिक्षु रुका नहीं, झुका नहीं। आगे बढ़ गया और तेरापंथ का प्रणेता बनकर तेरापंथ का दीप प्रज्वलित किया।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु समता के महासागर थे। उन्होंने अनुकूल-प्रतिकूल, हर परिस्थिति में समत्व योग की साधना की।

साध्वी समत्वयशा जी ने मंच का संचालन किया। डॉ० साध्वी सुधाप्रभा जी व साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने मंगल संगान किया।

सभा के मंत्री संजीव जैन, टीपीएफ नॉर्थ जोने के अध्यक्ष विजय नाहटा ने अपने

श्रद्धा सुमन अर्पित किए। प्रिया दुगड़, कनिष्का राखेचा, ईषिका दुगड़, मुस्कान दुगड़ ने सुमधुर स्वर लहरी प्रस्तुत की।

### उत्तर-कोलकाता

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा, उत्तर-कोलकाता के तत्त्वावधान में आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस मनाया गया। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जो पराक्रम करता है वह महर्षि होता है। आचार्य भिक्षु ने संयम और तप में पराक्रम किया इसलिए वे महर्षि थे। आचार्यश्री भिक्षु मारवाड़ के धोरी व अलबेले योगी थे। उनका जीवन अवदात्त, उदात्त, विशाल व गंभीर था। वे नैसर्गिक प्रतिभा के धनी थे। ऊर्जा के महास्त्रोत थे। जैन दर्शन व आगमों के मर्मज्ञ थे।

मुनिश्री ने आगे कहा कि आचार्यश्री भिक्षु की वाणी करीब की तरह चोट करने वाली थी। वे आत्मसाधक, आत्म आराधक, समाज सुधारक थे। उनकी धर्मक्रांति तेरापंथ के रूप में विख्यात हुई। वे पापभीरू, वैरागी, आत्मार्थी, भगवान महावीर की वाणी के प्रति समर्पित थे। उन्होंने अनेक कष्टों को सहन किया। अभाव में जीए, लेकिन साधना से विचलित नहीं हुए और हमेशा समभाव में रहे। मुनि कुणाल कुमार जी ने मंगल गीत का संगान किया।

इस अवसर पर स्वागत गीत अविशि ट्रिडेंट की बहनों ने किया। तेरापंथ सभा के

सभा अध्यक्ष राकेश संचेती, जुगराज बैद, दक्षिण हावड़ा तेयुप के अध्यक्ष विरेंद्र बोहरा, दक्षिण हावड़ा महिला मंडल की अध्यक्ष चंद्रकांता पुगलिया, तेरापंथी महासभा के कोषाध्यक्ष मदन मरोठी, उपासक रवि छाजेड़ ने विचार रखे।

कार्यक्रम का शुभारंभ उत्तर-मध्य कोलकाता तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने किया। आभार तेरापंथ सभा के अध्यक्ष विनोद बैद व संचालन दिलीप मरोठी ने किया। रामपुर के विधायक सुदीप्टो राय ने विचार रखे। विधायक का सम्मान साहित्य द्वारा तेरापंथ सभा के द्वारा किया गया।

### सिकंदराबाद

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस शिवरामपल्ली स्थित राघवेंद्र कॉलोनी में आयोजित हुआ। इस अवसर पर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि ग्रीक दर्शन में महानता के ३ गुणों का उल्लेख किया गया है। आचार्य भिक्षु के संदर्भ में विचार करें तो प्रतीत होता है प्रारंभ से ही उनमें आचार संपन्नता, संवेदन संपन्नता और विवेक संपन्नता निहित थी। अपने विराट गुणों के कारण उन्हें गुरु का विश्वास प्राप्त किया।

साध्वीश्री जी ने कहा कि शुद्ध साधुत्व के लिए आवश्यक है आत्मा की पवित्रता। आत्मपवित्रता आचार्य भिक्षु का प्रथम लक्ष्य था। शिथिलाचार और सुविधावादिता उनसे

कोसों दूर थी। पवित्र साधवाचार के प्रति वे सदा जागरूक रहे। वे सत्य समरांगण में महान योद्धा बन उतरे निखरते गए।

आचार्य भिक्षु हर विद्या में पारंगत थे। वे महान तत्त्वज्ञान, महान विचारक, महान ज्योतिष्क और महान व्यवहार कुशल जन-जन की आस्था के केंद्र थे।

साध्वीवृंद के मंगल भिक्षु स्तुति से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। राघवेंद्र कॉलोनी की बहनों एवं ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने भिक्षु अभिनिष्क्रमण इतिहास एवं श्रद्धासंगत की मनमोहक प्रस्तुति दी। सुषमा कुंडलिया एवं शिल्पा सुराणा आराध्य की अभिवंदना की। तेममं अध्यक्षा अनिता गिडिया एवं अणुव्रत कार्यकर्ता तिलोकचंद सिपानी ने विचार व्यक्त किए।

साध्वीवृंद ने गीत का समूह संगान किया। साध्वी शौर्यप्रभा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु ने सदैव संघ की सुरक्षा की। विकासमय तेरापंथ जैसा राजमार्ग दिया। साध्वी सिद्धिशा जी ने संयोजकीय वक्तव्य में कहा कि आचार्य भिक्षु ने हमें प्रकाशमय नई दिशा प्रदान की है।

राकेश कुंडलिया ने कृतज्ञता के स्वर प्रस्तुत किए। भिक्षु के नाम रात्रिकालीन 'संघर्ष में उत्कर्ष' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कवी प्रतियोगिता में भाई-बहनों ने उत्साह से भाग लिया। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले संभागियों को देवेन्द्र मनोज सुराणा परिवार की ओर से पुरस्कृत किया गया।

## पौषक आहार कार्यशाला - स्वास्थ्य के लिए आहार-शुद्धि जरूरी

### कांकरोली-राजसमंद।

टीपीएफ, राजसमंद के तत्त्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय महिला मंडल ने पौषक आहार और स्वास्थ्य विषय पर तेरापंथ सभा भवन में कार्यशाला का आयोजन किया।

मुनि संजय कुमार जी ने कहा कि स्वास्थ्य के लिए आहार की शुद्धि जरूरी है। आहार की शुद्धि आचार एवं विचार की शुद्धि होती है। मुनि प्रकाश कुमार जी ने कहा कि भोजन का शरीर, मन एवं भावों पर प्रभाव पड़ता है। मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने कहा कि जैसा खाओ अन्न-वैसा होवे मन। जैसा पीयो पानी वैसी बोले वाणी। हमारा भोजन शुद्ध, सात्त्विक एवं संतुलित होना चाहिए।

मुख्य वक्ता डॉ० सीमा कावड़िया ने कहा कि भोजन का संतुलन जीवन को असंतुलित बनाता है। कार्यशाला के अंत में डॉ० सीमा, डॉ० नीना कावड़िया, डॉ० सुमन बड़ाला एवं डॉ० रेखा सोनी का टीपीएफ द्वारा सम्मान किया गया।

टीपीएफ के अध्यक्ष डॉ० आर०के० बोहरा ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन डिंपल सोनी ने किया। आभार सोनू जैन ने व्यक्त किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में टीपीएफ के पूर्व अध्यक्ष विनोद बोहरा का योगदान रहा।

## अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर फिट वीमेन सप्ताह का आयोजन

### राजाजीनगर।

तेयुप, राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम् में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में महिलाओं के लिए फिट वीमेन सप्ताह के अंतर्गत क्वीन प्रोफाइल टेस्ट का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत महिलाओं से संबंधित ४४ प्रकार की विभिन्न जाँचें रियायती दर पर की गईं। पिछले एक सप्ताह से आयोजित इस कैम्प में ६९ महिलाओं ने अपनी जाँच करवाई। सभी महिलाओं का स्त्री विशेषज्ञ से परामर्श भी आयोजित किया गया।

अभातेममं राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया, अभातेममं, बैंगलोर सदस्य, राजाजीनगर महिला मंडल अध्यक्षा चेतना वेदमूथा एवं महिला मंडल परिवार का भी एटीडीसी श्रीरामपुरम् में पदार्पण हुआ। एटीडीसी स्टॉफ पवन, दीपाश्री, अशेष्या एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ पदमा प्रिया मैडम का सहयोग रहा।

## साध्वी रमाकुमारी जी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

### जय-जय रमाकंवर जी

#### ● शासनश्री साध्वी प्रशमरति, साध्वी अमितयशा, साध्वी शांतिप्रभा, साध्वी कारुण्यप्रभा, साध्वी चारुलता ●

सतर वर्षा तक संयम पाल्यो है रम्माकंवरजी।  
जय-जय रम्माकंवरजी।।

सावण कृष्णा आठ मन थे नोहर गाँव म जन्म्या,  
पिता जुहार माता हुलास रे मनडे म थे रम्या।  
चोरड़िया कुल गौरवशाली जन्मया रम्माकंवरजी।।

चार-चार भगिनी दीक्षा ली तुलसी प्रभु चरणां में,  
नैया पार करी रम्माजी महाश्रमण चरणा में।  
'शुभ' सेवा रो शुभमय योग मिल्यो है रम्माकंवरजी।।

तुलसी प्रभु र चरणामं संयममय जीवन पायो,  
त्रयी ज्येष्ठा भगिन्या रो स्नेह मिल्यो पग सुखदायो।  
हरियल भू पर अंतिम साँस लियो है रमाकंवरजी।।

महातपस्वी महाश्रमण सा कुशल सारथी पाया,  
नंदनवन सा भैक्षवशासन पाकर मन हरसाया।  
ज्योति चरण चरणा म अंतिम साँस ली रम्माकंवरजी।।

प्रेम भाव तीनों भगिन्यां रो मे तो आख्यानिरख्यो,  
दो महिना सेवा रो अवसर पाकर मनडो हरस्यो।  
प्रमोद भावना निजरां निरखी जय-जय रम्माकंवरजी।।

लय : संयममय जीवन हो----

### अर्हम

#### ● साध्वी यशोधरा ●

धन्य-धन्य शासनश्री तूने, जीवन गजब संवारा,  
खूब उजाली संयम चादर, शत-शत नमन हमारा।।  
जय-जय-जय जिनवर शासन, धर्मसंघ है आश्वासन।  
(वाह-वाह रामकुमारी तूने, जीवन गजब संवारा---)

चार-चार सुखशय्याओं में, रमण किया है जीभर,  
निर्मल गतिशील सदा उपयोगी, शासनश्री जैसे निर्झर।  
सिंह वृत्ति से बचपन में ही, साधुव्रत स्वीकारा।।  
वाह-वाह रमाकुमारी तूने---।।

महाश्रमण का मंगल साया, करुणारस बरसाए,  
गुरु करुणा से पंगुनर भी, प्रगति शिखर चढ़ जाए।  
आर्यत्रयी की परमकृपा से, पाया दिव्य उजारा।।  
वाह-वाह- रमाकुमारी तूने---।।

चार-चार बहनों ने दीक्षा, ले गणशान बढ़ाई,  
शुभप्रभा जी ने शुभ अवसर, पाया है वरदाई।  
गुरुदृष्टि ही सुख की सृष्टि, सूत्र मिला मनहारा।।  
वाह-वाह रमाकुमारी तूने---।।

सतियाँ सारी सेवाभावी, सेवा खूब बजाई,  
लंबे अर्से से स्थिरवासी, गुरु रिझवारी पाई।  
'यशोधरा' हिसार धरा का, चमका भाग्य सितारा।।  
वाह-वाह रमाकुमारी तूने---।।

लय : मॉय-निमॉय मुंडेर पे----

### अर्हम

#### ● डॉ० साध्वी शुभप्रभा ●

ॐ भिक्षु की जय हो, श्रीतुलसी की जय हो,  
महाप्रज्ञ की जय हो, महाश्रमण की जय हो।  
साँस-साँस में रमा हुआ था गुरुजी नाम निलय हो।।

शिशु सम सहज सरल मनभावन साध्वी रमाकुमारी,  
सम, शम, श्रम से सींची जिसने जीवन की हर क्यारी।  
तन, मन, वचन, कर्म से होता, सुकृत क्रय-विक्रय हो।।

पाँव-पाँव चलते सूरज की बनी किरण सुखदाई,  
श्रद्धा, सेवा और समर्पण मिला सूत्र वरदायी।  
गुरु दृष्टि ही सुख की सृष्टि, सबका आत्मालय हो।।

मेरा तेरा तेरा मेरा सुख शांति की कुंजी,  
खुले हाथ से बाँटो सबको यही है असली पूँजी।  
आगे बढ़ो, चढ़ो शिखरों तक, देती सीख सुनय हो।।

भाग्योदय से पाया हमने महावीर का शासन,  
आर्य भिक्षु से महाश्रमण तक तेजस्वी अनुशासन।  
क्या पाया है क्या खोया, इस चिंतन में तन्मय हो।।

मौन साधिका शासनश्री की सदा रही परछाई,  
उपशांत भाव की कर आराधना कर ली खूब कमाई।  
छोड़ अचानक चली गई वे चेतन ज्योतिर्मय हो।।

शासनश्री साध्वी यशोधरा संयम प्रेम शुभंकर,  
जागरूक श्रावक समाज का योग मिला श्रेयस्कर।  
हिसार उपसेवा केंद्र निराला, सर्वे मंगलमय हो।।

लय : संयममय जीवन हो----

### बन गई शिवपुर की राही

#### ● साध्वी ऋतुयशा ●

बन गई शिवपुर की राही।  
साध्वी रमाकुमारी ने ली, गण से आज विदाई।।

भाग्योदय से नंदनवन-सा, शासन हमने पाया,  
कल्पतरु-सम नेमानंदन, का मंगलमय साया।  
मृत्यु महोत्सव बनी तुम्हारी, बाजी यश शहनाई।।  
बन गई शिवपुर की राही---।।

ऋजुता-मृदुता, सहज, सरलता, सबके मन को भाती,  
मधुरभाषिणी स्वरज्ञज्ञता, रचना नित नई रचाती।  
शांत भाव से सही वेदना, श्रमशीला स्वाध्यायी।।  
बन गई शिवपुर की राही---।।

कर्मों को ललकारा तूने, हृद हिम्मत दिखलाई,  
कुल पर स्वर्णिम कलश चढ़ाया, गण सुषमा महकाई।  
आज सभी को छोड़ चली, यादों में सदा समाई।।  
बन ई शिवपुर की राही---।।

चारों बहनों में सबसे छोटी, साध्वी रमाकुमारी,  
शासनश्री से हुई सुशोभित, खिली भाग्य फुलवारी।  
बिना बतलाए पता नहीं क्यों? मौत अचानक आई।।  
बन गई शिवपुर की राही---।।

लय : जहाँ डाल-डाल पर----

### अर्हम

#### ● शासन गौरव साध्वी राजीमती ●

शासनश्री साध्वी रमाकंवर जी तेरापंथ धर्मसंघ की एक अच्छी साध्वी थी। स्वाध्यायप्रिया, सेवाभावी, योग-प्रयोगों का अभ्यास करने वाली, साहित्य लेखिका, वक्तव्य कला आदि अनेक विशेषताओं से संयुक्त थी। चिकित्सा संबंधी उनको अच्छी जानकारी थी।

दोनों बहनों की सेवा करती-करती पहले चली गई। यह नियति थी, परंतु उन्होंने पुरुषार्थ का जीवन जीया। शासनश्री साध्वी राजकुमारी जी एवं साध्वी जयश्री जी दोनों समार्थी में रहे। अपनी साधना का बल बढ़ाएँ।

साध्वी शुभप्रभा जी को सेवा का विशेष अवसर मिला। आचार्यश्री महाश्रमण जी के निर्देशानुसार इस सेवा केंद्र की अपनी उपयोगिता है। हिसार के भाई-बहन सेवा तथा चिकित्सा के क्षेत्र में अनुकरणीय है। जिंदल की सेवाओं से कितने साधु-साध्वी लाभान्वित हो रहे हैं।

## एक शाम भिक्षु के नाम भक्ति संध्या

### वाशी।

आचार्य भिक्षु की स्तुति करने के लिए भिक्षु भक्ति मंडल, वाशी द्वारा आयोजित 'एक शाम भिक्षु के नाम' कार्यक्रम का आयोजन साध्वी पंकजश्री जी के सान्निध्य में हुआ। कार्यक्रम में मुख्य प्रस्तुति संगायक कमल सेठिया द्वारा दी गई। मंगलाचरण भिक्षु भक्ति महिला मंडल द्वारा किया गया।

स्वागत सभा अध्यक्ष विनोद बाफना, तेयुप अध्यक्ष महावीर सोनी, महिला मंडल संयोजिका इंदु बड़ाला, भिक्षु फाउंडेशन के कोषाध्यक्ष ललित बोहरा ने किया। फाउंडेशन के महामंत्री बाबूलाल बाफना ने नव निर्मित समाज के भवन की विस्तृत जानकारी दी।

कार्यक्रम में आचार्य महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति महामंत्री महेश बाफना, कोषाध्यक्ष गौतम कोठारी, तेरापंथ सभा, मुंबई कार्याध्यक्ष नवरत्न गन्ना, तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन अध्यक्ष विनोद बोहरा, तेरापंथी महासभा कार्यकारिणी सदस्य तनसुख चोरड़िया, अपुविभा उपाध्यक्ष विनोद कोठारी, बीसी भालावत सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजन उपस्थित थे।

कोपरखैरना, नेरुल, सीबीडी, एरोली, ठाणा, उल्हासनगर, मानखुर्द क्षेत्र से अनेक जन पधारे। भिक्षु भक्ति मंडल के संयोजक प्रवीण चोरड़िया ने तेयुप द्वारा कार्यक्रमों की जानकारी दी।

## आध्यात्मिक मिलन समारोह

### सरदारपुरा।

साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने तेरापंथ भवन, अमरनगर से ६ दिवसीय प्रवास के बाद मंगल विहार किया। साध्वीश्री जी ने ६ दिवस के प्रवास के दौरान श्रावक समाज को तत्त्वज्ञान, आत्मा, कर्मवाद आदि की जानकारी, जप व ध्यान के प्रयोग करवाए।

श्रावक समाज इस प्रवास के दौरान मिले आध्यात्मिक लाभ के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए साध्वीश्री जी के विहार में सहभागी बना।

विहार करते हुए साध्वीश्री शुभम फार्म पधारे। वहाँ विराजित साध्वी प्रमोदश्री जी आदि साध्वियों से सौहार्दपूर्ण मिलन हुआ। आध्यात्मिक मिलन के इस दृश्य को देख उपस्थित श्रावक समाज का रोम-रोम आनंदित हो गया। इस अवसर पर उपस्थित साध्वीवृंद द्वारा स्वागत किया गया।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा, सरदारपुरा, तेयुप, महिला मंडल, कन्या मंडल के सदस्यों की उपस्थिति रही।



## जीवन के ऊध्वरोहण के लिए शरीर की नहीं आत्मा की उज्वलता जरूरी है

**सूरत।**

मुनि उदित कुमार जी एवं मुनि मोहजीत कुमार जी तेरापंथ भवन, सिटीलाइट में विराज रहे हैं।

मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि कुछ लोग अपने शरीर को स्वच्छ रखने के लिए सजग रहते हैं। वे महँगे साबुन से स्नान करते हैं। कुछ लोग अपने वस्त्रों को स्वच्छ रखने के लिए अत्यंत महँगे वॉशिंग पाउडर का उपयोग करते हैं। शरीर की ओर वस्त्रों की उज्वलता के लिए सजग रहना कुछ अंशों में जरूरी है, लेकिन उससे भी अनेक

गुना जरूरी है आत्मा की उज्वलता के प्रति सजग रहना।

मुनिश्री ने आगे कहा कि आदमी के पास बहुत ज्ञान होता है, उसकी वक्तव्य कला अच्छी होती है, उसकी लेखन शैली भी अच्छी होती है, लेकिन भीतर में अहंकार होता है, सरलता नहीं होती है तो उसका कोई मूल्य नहीं है। आदमी कितना पढ़ा है उसके पास कितनी डिग्रियाँ हैं, मूल्य उस बात का नहीं है। मूल्यवान है व्यक्ति की सरलता और विनम्रता। भगवान भी उसी भक्तों के ऊपर कृपा बरसाते हैं, जिसका

अंतरमन सरल और पवित्र होता है। जो सरलता को अपनाता है वह स्वतः भगवत्ता को प्राप्त कर लेता है।

मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि इस दुनिया में दूसरों को गिराने वाले बहुत लोग मिल जाएँगे, लेकिन नीचे गिरे हुए को उठाने वाले, उसे सहारा देने वाले बहुत कम मिलते हैं। आपका व्यवहार कितना सरल है उसका मूल्य है। इसलिए आदमी को अधम नहीं बल्कि उत्तम बनना चाहिए। मुनि अनंत कुमार जी ने प्राक् वक्तव्य में सदगुणों को विकसित करने की प्रेरणा दी।



## तेरुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

### तेरापंथ टास्क फोर्स एवं राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन दल का संयुक्त मॉक ड्रिल

**पश्चिम बंगाल।**

अभातेरुप के तत्वावधान में तेरापंथ टास्क फोर्स के इतिहास में पहली बार राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन दल के साथ पश्चिम बंगाल में आपदा विपदा में बचाव का मॉक ड्रिल संयुक्त रूप में किया गया। उलुबेरिया स्थित कैजुरी हाई स्कूल में साइक्लोन जैसी स्थिति में कैसे प्रभावित लोगों की सहरातया करनी चाहिए, उसका मॉक ड्रिल प्रस्तुत किया गया।

अजय पीचा ने सभी का स्वागत किया। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन के वरिष्ठ अधिकारी रिटायर्ड मेजर जनरल सुधीर व्हेल, एनडीआरएफ २-बीएन के कमांडेंट गुरविंदर सिंह, पश्चिम बंगाल सरकार के आपदा प्रबंधन प्रिंसिपल सेक्रेटरी अपनी टीमों के साथ उपस्थित रहे।

तेरापंथ टास्क फोर्स के पूर्वी भारत के क्षेत्र प्रभारी अजय पीचा, राष्ट्रीय ट्रेनिंग संयोजक जय चोरड़िया, राज्य सह-प्रभारी रजत दुगड़ सहित चिराग भंसाली, तुषार मेहता, विशाल सुराना, नवीन संचेती सहित कुल ७ कैडेट्स इस अभ्यास में सहभागी बने। उपस्थित सभी का आभार ज्ञापन जय चोरड़िया ने किया।

## भिक्षु विचार दर्शन कार्यशाला का आयोजन

**सांताक्रुज, मुंबई।**

आचार्यश्री महाश्रमण जी के मुंबई प्रवास एवं २०२३ चातुर्मास की तैयारियों के मद्देनजर तेरापंथ समाज के युवाओं का एक कार्यक्रम मुंबई स्तरीय आध्यात्मिक व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'भिक्षु विचार दर्शन' का आयोजन बहुश्रुत परिषद के संयोजक प्रोफेसर मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी के सहवर्ती संत के सान्निध्य में सांताक्रुज ईस्ट स्थित बिलावा ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया। जिसमें संपूर्ण मुंबई से तेरुप के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही।

कार्यक्रम में अभातेरुप के राष्ट्रीय सहमंत्री भूपेश कोठारी के अलावा चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष मदनलाल तातेड़, महामंत्री सुरेंद्र कोठारी एवं तेरापंथी

सभा, मुंबई के पूर्व अध्यक्ष नरेंद्र तातेड़ विशेष रूप से उपस्थित रहे।

इस कार्यशाला की शुरुआत मुनिवृंद द्वारा नमस्कार महामंत्र के साथ हुई। तेरुप सदस्यों द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। मुंबई सभा के पूर्व अध्यक्ष नरेंद्र तातेड़ ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया।

तेरुप, सांताक्रुज के अध्यक्ष मनीष बाफना ने सभी का स्वागत किया। मुंबई से ४० क्षेत्रों से तेरुप के अध्यक्ष एवं उनकी पूरी टीम से लगभग ४०० युवक एवं श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

मुनि सिद्ध कुमार जी ने सबसे पहले तेरापंथ धर्मसंघ क्यों है? आप तेरापंथी क्यों हैं? इसे विस्तार से बताया। मुनि अभिजीत कुमार जी ने तीन कहानियों के माध्यम से

धर्म और त्याग को बड़ी बारीकी से समझाया। अंत में दोनों मुनिवृंदों ने लोगों की जिज्ञासाओं का समाधान किया।

अभातेरुप सहमंत्री भूपेश कोठारी, मुंबई अभातेरुप टीम के साथ मुंबई चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष मदन तातेड़ व महामंत्री सुरेंद्र कोठारी को पूज्यप्रवर के चतुर्मास में अभातेरुप से संबंधित गतिविधियों व व्यवस्था के लिए पत्र सौंपा।

कार्यक्रम में अभातेरुप टीम से जितेंद्र परमार, अविनाश इंटोडिया, प्रसन्न पामेचा, दीपक समदड़िया, विकास कोठारी, मयंक धाकड़, नरेश चपलोट सहित अनेक पदाधिकारीगण, सदस्यों एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन तेरुप मंत्री नीलेश कोठारी ने किया।

## सेवा कार्य

**बेहाला।**

तेरुप, बेहाला द्वारा आयोजित सेवा कार्य के अंतर्गत जरूरतमंद बच्चों को स्वामीनारायण मंदिर-जोका में भोजन करवाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण के संगान द्वारा की गई।

तेरुप, बेहाला के सभी युवकों ने उत्साहपूर्वक इस कार्यक्रम में अपनी सहभागिता दर्ज कराई एवं कार्यक्रम को सफल बनाया। तेरुप, बेहाला के संस्थापक अध्यक्ष संदीप जैन एवं तेरुप बेहाला के सभी सदस्य कार्यक्रम में उपस्थित थे। स्वामीनारायण मंदिर के स्वामीजी श्री अमृतचरितजी ने आशीर्वाद देते हुए सबको प्रोत्साहित किया।

## महावीर जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन

**जयगँव।**

साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में भगवान महावीर स्वामी की २६२२वीं जन्म जयंती उत्सव उल्लास के साथ मनाया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि जैन धर्म के २४वें तीर्थंकर भगवान महावीर की वाणी शाश्वत सत्यों को सरलता से प्रस्तुत करती है। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक विकास की सारी दिशाओं का अवलोकन करती हुई वैराग्य का प्रतीक बना देती है। जहाँ से वीतरागता की साधना प्रारंभ की जा सकती है। महावीर की साधना गहराई एवं ऊँचाई को प्राप्त करने वाली थी। वैहिक कष्ट के साथ लक्ष्य की स्पष्टता से ही भगवान ने कितने-कितने जीवों को तार दिया। हम भी वीर प्रभु को आदर्श बनाकर उनके दर्शन को समझकर स्वयं के दर्शन करने का प्रयत्न करें।

इस अवसर पर साध्वी स्वस्तिकाश्री जी एवं साध्वी सुधांशुप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त किए। स्थानीय महिला मंडल ने 'महावीर ब्यूटी पार्लर' तथा 'चौदह स्वप्न' कार्यक्रम प्रस्तुत किया। ज्ञानशाला के

नन्हे-मुन्ने बच्चों ने अपनी प्रस्तुति दी। भूटान के फुंछोलिंग शहर के एस०डी०ओ० डासो जुर्मा, म्यूनिसिपल कॉरपोरेशन के चेयरमैन डासो उत्तम कुमार राई, प्रशासनिक अधिकारी फुंछो के साथ भारतीय दूतावास सचिव अंकिता जैन, प्रशासनिक अधिकारी संजीव कुमार आदि भी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

कार्यक्रम में स्थानीय सभाध्यक्ष गणेश सरावगी, अणुव्रत केंद्रीय समिति बंगाल प्रभारी विनोद बोधरा, नरेंद्र संचेती, धर्मचंद बाफना, अर्हम भजन मंडली, ताराबाई, वंदना आदि ने अपनी भावना गीत एवं

वक्तव्य के माध्यम से रखी।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथियों का स्वागत पूर्वाध्यक्ष बजरंग बरड़िया ने किया। मंडल संगान अनुभवी मंडल ने किया तथा संचालन पूजा आंचलिया ने किया। प्रभात की मंगल किरणों के साथ प्रभात रैली भी शहर की मुख्य सड़कों पर वीर उद्घोषों से गुंजायमान रही। इस कार्यक्रम में गोवाहाटी, कूचबिहार, कोकरझार, दिनहटा, माथाभंगा, तूफानगंज, सिलीगुड़ी, फालाकाटा, धुपगुरी, इस्लामपुर, अलीपुरद्वार, चेंगड़ाबांधा, गोलाकगंज आदि क्षेत्र संभागी बने।

## ऋषभदेव ने पढ़ाया अध्यात्म का पाठ

**शोलींगर।**

साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में, वसंतराज दुगड़ के निवास स्थान पर भगवान ऋषभ के दीक्षा कल्याणक दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

साध्वी शिवमाला जी ने कहा कि भगवान ऋषभदेव ने जहाँ संसार में रहकर दुनिया के भरण-पोषण, रहन-सहन के कार्यों का प्रतिपादन किया वहीं अपने संयम मार्ग को स्वीकरण कर दुनिया को भौतिकता से दूर हो आध्यात्मिकता का पाठ पढ़ाया।

साध्वीश्री जी ने इस अवसर पर ऋषभ स्तुति के साथ सामूहिक जाप भी करवाया। साध्वीश्रीजी के मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

## महावीर जयंती के उपलक्ष्य में गीत

**अर्हम**

● साध्वी कुमुदप्रभा ●

जहाँ वीर प्रभु का शुभागमन, उस नभ धरती का क्या कहना।  
चैत्र शुक्ला त्रयोदशी, उस दिव्य तिथि का क्या कहना।।

सिद्धार्थ कुल के उजियारे, त्रिशला अंगज मोहनगारे।  
कुंडलपुर नगरी है प्रमुदित, उस वर्धमान का क्या कहना।।

संगम ने अनगिन कष्ट दिए, समता से प्रभु ने सहन किए।  
चंडकौशिक का उद्धार किया, उस क्षमाशूर का क्या कहना।।

मैत्री का श्रोत बहे पल-पल, अपरिग्रह अहिंसा महामंगल।  
आग्रह-विग्रह जो दूर करे, उस अनेकांत का क्या कहना।।

तप से चमके कुंदन काया, त्रिभुवन में उत्सव है छाया।  
ज्ञानी, ध्यानी, दृढ-संकल्पी, उस वीर्यवान का क्या कहना।।

महावीर मिले हम सौभागी, किस्मत सारे जग की जागी।  
जाति कुल, बल से जो संपन्न, उस कांतमणि का क्या कहना।।

लय : दुनिया में देव---

## इंद्रियों का संयमित उपयोग करें : आचार्यश्री महाश्रमण



कनेरा, अहमदाबाद ३१ मार्च, २०२३

धर्मोपदेशक आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग १२ किलोमीटर का विहार कर कनेरा ग्राम में स्थित दलिया इंस्टीट्यूट ऑफ डिप्लोमा स्टडीज परिसर में प्रवास हेतु पधारे।

परम पावन ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि मानव शरीर में पाँच इंद्रियाँ हैं और भी कई प्राणियों के शरीर में पाँचों इंद्रियाँ होती हैं। ऐसे भी बहुत से प्राणी हैं, जिनके पाँचों इंद्रियाँ नहीं होती। यह

इंद्रिय जगत विकास का प्रतीक है कि किस प्राणी का कितना विकास है।

सबसे कम एकेन्द्रिय प्राणी का होता है, फिर द्विइंद्रिय, त्रिइंद्रिय, चतुरिंद्रिय और पंचेन्द्रिय में क्रमशः विकास बढ़ता जाता है। ये इंद्रियाँ ज्ञान का साधन बनती हैं। इंद्रियों के उपयोग में संयम की चेतना भी रहनी चाहिए। संयम होता है, तो आत्मा की दृष्टि से भी अच्छा है और व्यावहारिक दृष्टि से भी काफी अच्छा रह सकता है। यह दृष्टांत दो कछुओं के माध्यम से समझाया।

अणुव्रत भी संयम की बात बताने वाला कार्यक्रम है। संयम ही जीवन है। मोह कर्म के प्रभाव से आदमी असंयम में चला जाता है। यह भी एक प्रसंग द्वारा समझाया कि असंयम कितना नुकसान कर सकता है। संयम रखें तो इंद्रियाँ उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं।

असंयमित इंद्रियाँ दुष्ट घोड़े के समान हैं, जो कुपथ में ले जाने वाला होता है। कुलीन घोड़ा तो पार लगा देता है। विवेक का नाश करने के लिए असंयमित इंद्रियाँ काले नाग के समान हैं, जो पुण्यरूपी वृक्ष को काटने के लिए कुठार के समान है। इंद्रियों को संयमित करने के लिए प्रेक्षाध्यान में सर्वेन्द्रिय संयम का प्रयोग भी कराया जाता है। इंद्रियों का संयम कल्याणकारी बात हो सकती है।

अमराव बैंगानी व दुगड़ परिवार दिल्ली से संबल लेने हेतु आए हैं। अमराव शांत स्वभाव के लगते थे एवं सायर बाई अभातेमम से जुड़ी हुई हैं।

सायर बाई एवं परिवार वालों ने अपनी भावना श्रीचरणों में अभिव्यक्त की। दलिया इंस्टीट्यूट से प्रिंसिपल डॉक्टर के०जी० मेहता ने कहा कि अणुव्रत यात्रा मिशन का मैं अपने इंस्टीट्यूट में स्वागत करता हूँ, इससे समाज सुधार हो सकता है। आपके पधारने से धरती पवित्र हो गई। हमारे विद्यार्थी आपसे प्रेरणा ग्रहण करेंगे। व्यवस्था समिति द्वारा प्रिंसिपल का सम्मान किया गया।

पूज्यप्रवर ने इंस्टीट्यूट के विद्यार्थियों को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति को समझाकर संकल्प स्वीकार करवाए।

## सम्यक् आचरण के लिए सम्यक् ज्ञान जरूरी : आचार्यश्री महाश्रमण

डभाण खेड़ा, १ अप्रैल, २०२३

व्यावसायिक संबंधी वर्ष का प्रथम दिन।

नैतिकता के पुरोधा आचार्यश्री महाश्रमण जी विहार कर प्रातः खेड़ा ग्राम के एच०डी० पारेख हिंदी स्कूल परिसर में प्रवास हेतु पधारे। मंगल पाथेय प्रदान करते हुए शांतिदूत ने फरमाया कि हमारे जीवन में ज्ञान का बहुत महत्त्व है। अज्ञान अहितकर हो सकता है। अज्ञान कष्ट है। गुस्सा-अहंकार आदि पाप है, पर उनसे ज्यादा खराब अज्ञान है।

अज्ञान से आवृत्त चेतना वाला व्यक्ति मेरा हित किसमें, अहित किसमें, इसका भी विवेक नहीं कर पाता है। ज्ञान

का फल-सार है—आचार। जो जाना वो आचरण में कैसे काम आए। हेय-उपादेय ये विवेक है। ज्ञान सम्यक् होगा तो आचरण भी सम्यक् हो सकेगा। हमारे जीवन में सम्यक् ज्ञान का विकास हो, यह एक प्रसंग द्वारा समझाया कि खुद का ज्ञान अच्छा होना चाहिए।

ज्ञान प्रकाश करने वाला होता है। अध्यात्म विद्या का भी ज्ञान हो, जिसे पाकर आदमी राग से विराग की ओर आगे बढ़े। श्रेयों-कल्याणों में अनुरक्त हो जाए। मैत्री से भावित बन जाएँ। वो ज्ञान अध्यात्म का ज्ञान है। इससे तत्त्व का बोध प्राप्त हो सकता है।

दुनिया में अनेक विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय हैं, जहाँ ज्ञान

का आदान-प्रदान होता है। अध्यात्म विद्या में आत्मवाद, कर्मवाद, स्वर्ग-नरक आदि बहुत-सी बातें हैं। कितने धर्म-ग्रंथ दुनिया में हैं, अनेक विषय हो सकते हैं। शास्त्रों का सार भी यही है कि हमारा जीवन अच्छा बने। अहिंसा, मैत्री, सच्चाई का विकास हो। अणुव्रत भी यही सिखलाता है।

धर्म ऐसा तत्त्व है, जिसके द्वारा उद्धार हो सकता है। संन्यासी तो हर कोई न बन सके, परंतु सद्-गृहस्थ सज्जन आदमी बने। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम जीवन में आने से आदमी अच्छा बन सकता है। आदमी के जीवन में धर्म-आचार आ जाए। ज्ञान और आचार दोनों साथ में रहे, यह एक अंधे

और पंगु के प्रसंग द्वारा समझाया कि ज्ञान और आचार एक-दूसरे के पूरक बन जाएँ।

यह संसार दुखों और संताप की आग है, इससे बचने के लिए ज्ञान और आचार हो तो सर्वदुःख मुक्ति-मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। विद्यालयों में विद्यार्थियों में अच्छे संस्कार आ जाएँ तो अच्छा जीवन जी सकते हैं, विकास की बात हो सकती है। ज्ञान और आचार दोनों सम्यग् रूप से हमारे में पुष्ट रहें।

पूज्यप्रवर का स्वामी नारायण के दो संतों से मिलना हुआ है। खेड़ा में तेरापंथी परिवार भी हैं, सबमें अच्छी भावना रहे। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का दिल्ली में स्वामी नारायण परिसर में कार्यक्रम भी हुआ था।

पूज्यप्रवर ने ज्ञानार्थियों को आशीर्वाचन फरमाया।

स्वामी नारायण संप्रदाय से स्वामी निर्माणप्रिय जी ने अपनी भावना को अभिव्यक्त करते हुए कहा कि संत मिलन से खुशी प्राप्त होती है। व्यवस्था समिति द्वारा दोनों संतों का सम्मान किया गया। स्थानीय सभाध्यक्ष जयेश चोपड़ा, तेरापंथ महिला मंडल, तेयुप अध्यक्ष जितेंद्र चोपड़ा, ज्ञानशाला प्रस्तुति-समाज सेवक कल्पेश वाघेला ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। स्कूल परिवार का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

### बेस्ट टीपीएफ यूनिट का अवार्ड

औरंगाबाद।

टीपीएफ, छत्रपति संभाजी नगर, औरंगाबाद को नेशनल लेवल पर बेस्ट यूनिट का अवार्ड प्राप्त हुआ। यह अवार्ड नेशनल कॉन्क्लेव, अहमदाबाद में दिया गया। टीपीएफ द्वारा अनेक सामाजिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियाँ चलाई जा रही हैं। टीपीएफ द्वारा साइक्लॉथोन, कैरियर काउंसलिंग, सेमिनार आदि भी समय-समय पर आयोजित किए जाते हैं।

टीपीएफ के वेस्ट जोन के ज्वाइंट असेक्रेटरी अंकुर लुणिया ने जानकारी दी। टीपीएफ के अध्यक्ष पूजा बागरेचा ने प्रसन्नता व्यक्त की। मंत्री नेहा लुनिया ने टीपीएफ फ्यूचर में नए मेंबर को एड करना लक्ष्य निर्धारित किया। तेयुप के अध्यक्ष विवेक बागरेचा ने भी टीपीएफ को बधाई देते हुए कहा कि तेयुप सदैव ही टीपीएफ के हर कार्य में साथ देगा।

### सेवा कार्य

पूर्वांचल-कोलकाता।

तेरापंथ किशोर मंडल, पूर्वांचल-कोलकाता ने तेयुप के निर्देशन में होली के अवसर पर सुभाष उद्यान, स्वस्तिक नगर पानी हट्टी जाकर बच्चों को सत्तु, दलिया, गुलाल व स्टेनरी आदि वितरण किया। लगभग ५० बच्चों को यह मिक्स पैकेट की किट दी गई।

सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र का जाप किया गया। संस्था के प्रभारी ने तेरापंथ किशोर मंडल व तेयुप के प्रति आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में किशोर मंडल के प्रभारी व परिषद के सहमंत्री-प्रथम यश दुगड़, कार्यकारिणी सदस्य रोहित बोथरा तथा किशोर मंडल से अर्पित मालू सहित अनेक सदस्यों की सहभागिता रही।

♦ आदमी को अहिंसा, संयम और तप में पुरुषार्थ करना चाहिए। इन तीनों में सम्यक् पुरुषार्थ करने वाला आदमी मोक्ष की दिशा में गतिमान हो सकता है।

— आचार्यश्री महाश्रमण



## सदुपयोग कर समय को सार्थक बनाएँ : आचार्यश्री महाश्रमण

कांकरिया-मणिनगर, अहमदाबाद।  
२८ मार्च, २०२३

अणुव्रत संयम सप्ताह के अवसर पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि काल छः द्रव्यों में एक द्रव्य है। छः द्रव्यों में पाँच तो अस्तिकाय हैं, पर काल के पीछे अस्तिकाय नहीं लगा है। यानी प्रदेशों का समूह नहीं है। काल बीतने के बाद समाप्त हो जाता है।

समय का आदमी किस तरह उपयोग करता है, यह महत्त्वपूर्ण है। काल को आगे से पकड़ें। आगामी काल का हम कैसे उपयोग करें, यह ध्यातव्य विषय बन सकता है। २४ घंटों में से २-२ मिनट निकालें तो ४८ मिनट की सामायिक हो सकती है। नादान आदमी समय का



संपादक पवन अग्रवाल ने इसके बारे में जानकारी दी। इससे पहले २०१४ में गुरुदेव तुलसी एवं २०२० में आचार्यश्री महाश्रमण के जीवन पर विशेषांक प्रकाशित किया गया था। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया।

अभातेयुप के महामंत्री पवन मांडोट ने बताया कि अहमदाबाद में छात्राओं के लिए एक हॉस्टल बनाया जा रहा है। उसके प्रारूप का लोकार्पण किया गया। इसे शेषमल दक की स्मृति में दक परिवार द्वारा बनाया जा रहा है।

अणुव्रत विश्व भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने अणुव्रत वाहिनी का लोकार्पण पूज्यप्रवर की सन्निधि में किया। अणुविभा द्वारा वाहिनी के अनुदानदाताओं का सम्मान किया गया।



दुरुपयोग कर लेता है। हर दिन, हर सप्ताह, हर माह और हर वर्ष का महत्त्व होता है। समय का अपने ढंग से महत्त्व होता है।

आचार्यश्री तुलसी छोटी उम्र में साधु बनकर आचार्य बन गए। उन्होंने अणुव्रत जैसे आंदोलन को चलाया। अणुव्रत हर वर्ग के लिए उपयोगी है। हमारी जीवन शैली अणुव्रत आधारित हो। अणुव्रत अमृत महोत्सव का वर्ष चल रहा है। अणुव्रत के कार्यों में और अधिक स्फूर्ण लाने का अवसर है। आर्थिक शुचिता भी रहे। साथ ही गृहस्थों का जीवन अच्छा

रहे।

सेवा के अनेक क्षेत्र हैं, पर अणुव्रती बनें। अच्छे इंसान बनें। अणुव्रत आंदोलन इंसानियत की बात करने वाला आंदोलन है। धर्म आदमी का कोई भी हो, उसका आचरण अच्छा होना चाहिए। अणुव्रत की आत्मा संयम है। अपनी दिनचर्या में साधना के रूप में जप, ध्यान, स्वाध्याय को शामिल करें। गृहस्थ होते हुए भी संयम रखें। व्यवसाय-व्यापार में पवित्रता रहे।

आगम के सूत्र हमें काल के प्रति जागरूक रहने का संदेश देते हैं। हमारा

समय प्रमाद में न बीते। अच्छे संकल्प वाले व्यक्ति जीवन में अच्छा कार्य कर सकते हैं। अणुव्रत का कार्य अणुव्रत विश्व भारती कर रही है। अणुव्रत का अच्छा प्रचार-प्रसार हो। लोगों में अणुव्रत के प्रति आकर्षण की भावना जाग्रत हो। समय का अच्छा उपयोग करते हुए अणुव्रत के कार्यों को आगे बढ़ाते रहें।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि आत्मा को चमकाने के लिए अपनी आत्मा को रोज माँजना होगा। दो प्रकार की आत्मा होती है—बद्ध आत्मा और मुक्त आत्मा। हमें आत्मा से परमात्मा बनना है। सदगुरु हमें आत्मा से परमात्मा बना सकते हैं। आत्म-शुद्धि के लिए हमें स्वाध्याय, ध्यान और जप करना होगा। छः जीव निकाय के त्राता बनें। पापकारी प्रवृत्ति से बचें। अपने चिंतन को सकारात्मक बनाएँ।

साध्वी आत्मप्रभा जी ने बताया कि संत महात्मा चलते-फिरते तीर्थ होते हैं। गुजरात भाजपा के कोषाध्यक्ष धर्मेन्द्र भाई शाह, मणिनगर के विधायक अमूल भाई भट्ट, अशोक सेठिया ने भी अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों की



प्रस्तुति के साथ ही कन्या मंडल की भी प्रस्तुति हुई। विशाखा दफ्तरी, अनीता कोठारी, तनीशा बरड़िया, हितांशी सामसुखा, उपासक हनुमानमल दुगड़, कीर्ति सामसुखा ने भी गीत-कविता से पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना की। महिला मंडल, कन्या मंडल की भी गीत की प्रस्तुति हुई, साथ ही दोनों ने संकल्प स्वीकार किए।

हिंदी साहित्य परिषद् द्वारा पूज्यप्रवर के विषय में अध्यात्म वंदना विशेषांक पूज्यप्रवर को उपहृत किया गया। पुस्तक का नाम है—'नूतन भाषा सेतु'। इसके

प्रवचन से पूर्व आचार्यप्रवर असक्षम श्रावक-श्राविकाओं को दर्शन प्रदान कराने स्वयं पधारें। कई सोसाइटियों एवं घरों में पधारकर पूज्यप्रवर ने श्रावकों को धन्य-धन्य कर दिया। मुख्य मुनिप्रवर ने भी कल और आज सैकड़ों परिवारों की सार-संभाल की। कांकरिया-मणिनगर के श्रावक-श्राविकाएँ पूज्यप्रवर के पदार्पण से धन्य-धन्य हो गए।

ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने 'कर्म समो नहीं कोई' गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

### आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियाँ

